Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰٓى اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत :135)

अनुवाद: हे वे लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह के लिए गवाह बनते हुए इन्साफ़ को मज़बूती से क़ायम करने वाले बन जाओ चाहे स्वयं अपने विरुद्ध गवाही देनी पड़े या माता पिता और निकट रिश्तेदारों के विरुद्ध।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ نَحْمَدُهٗ وَنُصَلِّيْ عَلٰى رَسُوْلِهِ الْكَرِيْمِ وَعَلٰى عَبْدِهِ الْمَسِيْحِ الْمَوْعُوْدِ

وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ وَّاَنْتُمْ اَذِلَّةٌ

वर्ष 6

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक-2

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

29 जमादी अल्अव्वल 1442 हिज्री कमरी 14 सुलेह 1400 हिज्री शम्सी 14 जनवरी 2021 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

ख़ुदा तआला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि स्वयं क़ौम अपनी हालत को तबदील न करे ख़ुदा तआला की ओर शरण लो और नमाज़ों को नियमित रूप से इल्तिज़ाम से पढ़ो, नमाज़ें माफ़ नहीं होतीं, पैग़म्बरों को भी माफ़ नहीं हुईं।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

ऊलिल अम्र (राज्य अधिकारियों) की आज्ञाकारिता

क़ुरआन में आदेश है। اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ وَاُولِى الْاَمْرِ مِنْكُمْ (अल् निसा-60) अब ऊलिल अम्र (राज्य अधिकारियों) की आज्ञाकारिता का स्पष्ट आदेश है। यदि कोई कहे कि गवर्नमेंट मिन्कुम में शामिल नहीं तो यह उसकी बड़ी ग़लती है। गवर्नमेंट जो बात शरीयत के अनुसार करती है वह मिन्कुम में शामिल है। जो हमारा विरोध नहीं करता वह हम में शामिल है। स्पष्ट रूप में क़ुरआन से प्रमाणित होता है कि गवर्नमेंट की आज्ञाकारिता करनी चाहिए और उसकी बातें मान लेनी चाहिऐं।

सआदत के मार्ग पर चला करें

पवित्रता और संयम की ओर ध्यान देना चाहीए और सआदत के मार्ग पर चलना चाहिऐं तब ही कुछ होता है। اِنَّ اللّٰهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ (अर्राद :12) ख़ुदा तआला किसी क़ौम की हालत नहीं बदलता जब तक कि स्वयं क़ौम अपनी हालत को तबदील न करे ज़रूरी बात यह है कि लोग ख़ुदा तआला की ओर ध्यान दे, नमाज़ पढ़ें, ज़कात दें, दूसरों के अधिकार नष्ट न करने और अनैतिकता से रुक जाएँ। यह बात पूर्णता प्रमाणित है कि कभी कभार जब एक बुराई करता है तो वह सारे शहर और घर की हलाकत का कारण हो जाता है। अत: बुराइयाँ छोड़ दो कि वह हलाकत का कारण हैं।

नमाज़ों को बाक़ायदा इल्तिज़ाम से पढ़ो।

ख़ुदा तआला की ओर शरण लो और नमाज़ों को नियमित रूप से इल्तिज़ाम से पढ़ो। कभी लोग एक ही समय की नमाज़ पढ़ लेते हैं। नमाज़ें माफ़ नहीं होतीं। पैग़म्बरों को भी माफ़ नहीं हुईं। एक हदीस में आया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास एक नई जमाअत आई, उन्होंने नमाज़ की माफ़ी चाही। आपने फ़रमाया कि जिस धर्म में अमल नहीं वह धर्म कुछ नहीं।

(मलफ़ूज़ात, भाग 1 पृष्ठ 238- 240 प्रकाशित क़ादियान 2018)

☆ ☆ ☆ ☆

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

ख़ामोशी और ध्यान के साथ ख़ुतबा सुनने का आदेश

(934)हज़रत अबु हुरैरा रज़ि अल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यदि तुम अपने साथी से जुमआ के समय जबकि इमाम ख़ुत्बा दे रहा हो कहो चुप रहो तो तुमने भी ग़लत बात की।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताबुलजुमआ)

(962)हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि : मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत अबूबकर, हज़रत उमर और हज़रत उसमान रज़ी अल्लाहो अन्हुमा के साथ ईदैन पढ़ी हैं। यह सब ख़ुतबा से पहले नमाज़ पढ़ा करते थे।

(964)हज़रत इब्ने अब्बास रज़ी अल्लाहो अन्हो से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इदुल्फित्र के दिन दो रकातें पढ़ीं और आप ने न इससे पहले कोई (नफ़्ल) पढ़े और न इसके बाद। फिर आप महिलाओं के पास आए और हज़रत बिलाल रज़ि अल्लाहो अन्हो आप के साथ थे। आप ने औरतों को सदके का आदेश दिया तो वह सदक़ा देने लगीं। कोई महिला अपनी बाली फेंकती और कोई अपना हार।

(सही बुख़ारी, भाग 2 किताब अल-ईदेन, प्रकाशित क़ादियान 2006)

आप यह क्यों कहते हैं कि यदि यह धार्मिक सेवा में व्यस्त रहा तो अपने भाई के टुकड़ों पर पलेगा आप यह क्यों नहीं कहते कि यह धर्म की सेवा करेगा तो इसके कारण अल्लाह तआला इस के भाई की आय में भी बरकत पैदा कर देगा।

सय्यदना हज़रत मुसल्लेह मौऊद रज़ि अल्लाह तआला अन्हो फ़रमाते हैं

मुझे याद है हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ि अल्लाह अन्हो के समय में जब मीर मुहम्मद इसहाक़ साहिब की शिक्षा का ज़माना आया (मीर साहिब मुझ से पौने दो वर्ष छोटे थे) तो हमारे नाना-जान मरहूम ने हज़रत ख़लीफ़ा अवूवल रज़ी अल्लाहु अन्हु से परामर्श लिया कि उसे क्या पढ़ाया जाए। आपने फ़रमाया उसको धार्मिक शिक्षा दिलवाए। एक बेटे को तो आपने दुनिया पढ़ाई है इस को धार्मिक शिक्षा दिलवा दें। इस पर नाना जान मरहूम ने अपनी ओर से नानी अम्मां की ओर से कहा कि फिर तो यह अपने भाई के टुकड़ों पर पलेगा। जब उन्होंने यह बात कही तो हज़रत ख़लीफ़ा अवूवल रज़ी अल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया ख़ुदा कई बार एक व्यक्ति को दूसरे की ख़ातिर रोटी देता है आप यह क्यों कहते हैं कि यदि यह धार्मिक सेवा में व्यस्त रहा तो अपने भाई के टुकड़ों पर पलेगा। आप यह क्यों नहीं कहते कि यह धर्म की सेवा करे गा तो ईस के कारण अल्लाह तआला इस के भाई की आय में भी बरकत पैदा कर देगा। फिर आपने हज़रत अब्बू हुरैरा की घटना सुनाई। जब वह इस्लाम लाए तो उनके दिल में शौक़ पैदा हुआ कि में रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस में बैठूँ और आपकी बातें सुनूँ। इसलिए वह रात-दिन मस्जिद में बैठे रहते थे ताकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब भी बाहर तशरीफ़ लाएं और कोई बात करें तो उस के सुनने से वंचित न रहें। इन की रिवायतों की प्रचुरता को देखकर कुछ लोग समझते हैं

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिरिहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-2)

सयद्दना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ का "मस्जिद मन्सूर" आकिन के उद्घाटन के अवसर पर भाषण

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादकः सय्यद मुहयिद्दीन फ़रीद)

23 मई हफ़्ता के दिन 2015 ई (शेष...........)

भाषण हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ "मस्जिद मंसूर' आकिन के उद्घाटन के अवसर पर,

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज ने फ़रमाया मेयर साहिब ने यह भी कहा कि मिल कर रहना चाहिए और एक अच्छी सोसाइटी की यही ख़ूबी है। यह निश्चित रूप से बहुत अच्छी बात है। हमें इस तरह से मिल जुल कर रहना चाहिए क्योंकि इस तरह हम धर्म की हक़ीक़त को पा सकते हैं और हम इन्सानी क़दरों का ख़्याल रखने वाले होंगे। अत: इन्सानी क़द्रें क़ायम रखना यह सबसे ज़्यादा ज़रूरी चीज़ है। एक बड़ी अच्छी नसीहत मेयर साहिब ने की कि मुझे आशा है कि जमाअत अहमदिया integration के लिए सबसे बढ़कर प्रयास करेगी। आपस में मिल जुल कर रहने के लिए सब से ज़्यादा प्रयास करेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज ने फ़रमाया

और यक़ीनन मुझे आशा है कि जिस तरह पहले यहां प्रयास होते रहे इस से बढ़कर इस बारे में प्रयास होगा और हम इंशाअल्लाह तआला वे समस्त हुक़ूक़ अदा करने का प्रयास करेंगे जो एक मुल्क में एक अच्छे शहरी को अदा करने चाहिएं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज ने फ़रमाया इसी तरह integraion minister के प्रतिनिधि ने यहां आकर अपनी मिनिस्ट्री की ओर से कुछ इज़्हार-ए-ख़्याल किया उन्होंने भी यह कहा कि जर्मनी में जर्मन जो हैं बड़ा वसीअ हौसला रखते हैं और उनसे हौसला मंद integration होती है यह बिल्कुल सही बात है कि जर्मन क़ौम में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़ा हौसला है। उन्होंने यहां बहुत सारी क़ौमों को अपने अंदर समाहित किया हुआ है और यह हौसला जब तक क़ायम रहेगी तब तक दुनिया में आपके उच्च आचरण का प्रचार होता रहेगा। लेकिन इस हौसला को प्रकट करने के लिए आने वाली क़ौमों का भी कर्तव्य होता है कि वह भी ऐसे हौसले का प्रकटन करें। मैं यह नहीं कहता कि हम आएं और जो मर्ज़ी करते रहीं। बाहर से आए हुए एशीयन लोग जो जबकि बाहर से आए हैं लेकिन अब जर्मन क़ौम का हिस्सा बन चुके हैं । यहां पैदा हुए बच्चे जो चाहे हिंदुस्तान से आए या पाकिस्तान से आए या किसी और मुल्क से आए लेकिन यहां पैदा हुए और यहां की भाषा बोलते हैं यहां का हिस्सा बन चुके हैं यदि वे भी केवल भाषा की हद तक नहीं, बल्कि अपने आपको integrate करने के लिहाज़ से भी जब तक हौसला नहीं दिखाते उस समय तक यह आरोप नहीं दे सकते कि जर्मन हमें अपने अंदर जज़्ब (मिलाते)नहीं करते। जज़्ब करने के लिए तो बाहर से आने वालों को भी वही प्रकटन करने होंगे जिसका प्रकटन पुरानी जर्मन क़ौम ने किया यहां रहने वाले स्थानीय जर्मनों ने किया। अत: जैसा कि मैंने कहा जहां तक जमाअत अहमदिया का सम्बन्ध है इंशा अल्लाह तआला हम इस हौसलामंदी का उत्तर, बढ़कर हौसलामंदी से देंगे और हमेशा यह साबित करेंगे कि यहां रहने वाला हर अहमदी देश का वफ़ादार है और क़ौम की और देश की तरक़्क़ी के लिए कार्यरत है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज ने फ़रमाया ज़िला असैंबली के मेंबर पधारे उन्होंने फूलों की दुकान का भी वर्णन किया कि वह दुकान जो हमारे अहमदी की है वह तो फूल प्रस्तुत करते हैं तो उन साहिब ने एक उदाहरण के लिए उदाहरणता यहां के लोगों में इन फूलों को प्रस्तुत करने का प्रयास किया है यह बताने के लिए हमारी ओर से सांप्रदायिकता की भावनाओं का प्रकटन नहीं होगा। हमारी ओर से पत्थर नहीं पड़ेंगे हमारी ओर से तलवार नहीं उठाई जाएगी बल्कि हम तो फूल प्रस्तुत करने वाले लोग हैं और हम यह हमेशा प्रस्तुत करते रहेंगे। लेकिन यह फूल जो प्रस्तुत किए जा रहे हैं ये फूल जो आपके सामने रखे जा रहे हैं ये फूल जिसको लोग पसंद कर के और पैसे ख़र्च कर ख़रीदते हैं ये फूल तो अपनी ख़ूबसूरती को भी अस्थाई तौर पर क़ायम रखने वाले हैं और उनकी ख़ुशबू भी यदि है तो वो अस्थाई ख़ुशबू है। लेकिन सबसे अच्छे फूल जो जमाअत अहमदिया प्रस्तुत करती है वे तो वे उच्च आचरण हैं जिनको हमेशा क़ौमें याद रखती हैं और दुनिया में हर जगह जमाअत अहमदिया के उच्च आचरण को सराहा जाता है और उनकी प्रशंसा की जाती है और यह वह हक़ीक़ी फूल हैं जो जमाअत अहमदिया प्रस्तुत करती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

फिर एक बात यह भी है कि यहां यह भी संदेश में पढ़ा गया कि पड़ोसी का हक़ अदा करना है। पड़ोसी के हक़ का जहां तक प्रश्न है इस्लाम पड़ोसी के हक़ की इतनी नसीहत करता है कि कुरआन करीम में भी बार-बार पड़ोसी के हक़ की ओर ध्यान दिलाया गया है और इस्लाम के संस्थापक हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो पड़ोसी के हक़ का इतना ध्यान दिलाया कि कुछ सहाबा कहते हैं कि हमें ख़्याल पैदा होने लगा कि शायद पड़ोसी भी हमारी जायदादों में इसी तरह वारिस बन जाएं जिस तरह हमारे हक़ीक़ी वुरसा वारिस होते हैं। इस्लाम ने इस सीमा तक पड़ोसी के हुक़ूक़ का ख़्याल रखा है। और फिर पड़ोसी केवल वह नहीं जिसकी दीवार अपने घर के साथ जुड़ती है या एक ही बिल्डिंग में रहने वाले कुछ फ़्लैट पड़ोसी हैं। बल्कि आपके साथ यात्रा करने वाला भी पड़ोसी है आपके शहर में रहने वाला भी आपका पड़ोसी है आप के दफ़्तर में काम करने वाला भी आपका पड़ोसी है और उन सबके हुक़ूक़ अदा करना एक अहमदी का कर्तव्य है एक हक़ीक़ी मुस्लमान का कर्तव्य है।

अत: पड़ोसी के यह हुक़ूक़ हैं जो इस्लाम क़ायम करता है और यह वह हुक़ूक़ हैं जिनकी अदायगी हम पर अनिवार्य है एक अहमदी मुस्लमान पर अनिवार्य है और एक हक़ीक़ी मुस्लमान पर अनिवार्य है। अहमदियों को हमेशा याद रखना चाहिए अपने इन कर्तव्यों की ओर ध्यान देते रहना चाहिए। उनको मैं कहता हूँ कि पहले से बढ़कर अपने इन कर्तव्यों की ओर ध्यान दें। पहले से बढ़कर अपनी इबादतों की ओर ध्यान दें। पहले से बढ़कर अपने उच्च आचरण अपने पड़ोसियों को भी दिखाएं और अपने शहर-वालों को भी दिखाएं बल्कि इस देश के लोगों को दिखाएं और कोई यह एतराज़ न कर सके कि इस्लाम की शिक्षा ऐसी शिक्षा है जिसमें कट्टरवाद है बल्कि यह लोग कहें कि इस्लाम की शिक्षा तो अच्छी शिक्षा है लेकिन इस को बिगाड़ने वाले कुछ मुस्लमान हैं जिन्होंने बिगाड़ दिया। लेकिन इस की हक़ीक़ी तस्वीर भी अहमदी मुस्लमानों के माध्यम से हम देख सकते हैं। अत: इस से बढ़कर प्रकटन करना होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज ने फ़रमाया

आप अहमदियों को मैं कहता हूँ कि आप लोगों ने इस्लाम की ख़ूबसूरत शिक्षा का पहले से बढ़कर सफ़ीर बनना है। पहले से बढ़कर इसका हक़ अदा करना है और इसके लिए आपस में भी मुहब्बत और प्यार में बढ़ें क्योंकि मस्जिद का हक़ उस समय तक अदा नहीं हो सकता जब तक आपस में मुहब्बत और प्यार नहीं होगा। जब इबादत करने के लिए आते हैं जब एक सफ़ में खड़े होते हैं जब दुआएं कर रहे होते हैं सलाम फेर रहे होते हैं तो सब वे लोग जो आपके दाएं बाएं आगे पीछे खड़े हैं वो इस में शामिल होते हैं और यदि केवल मुँह से तो दुआएं कर रहे हो मुँह से तो अस्सलामो अलैकुम निकलता हो लेकिन दिलों में दुश्मनियां और कपट हैं किसी के पीठ पीछे बोलना हो तो आप इबादत का हक़ नहीं अदा कर सकते। आप नमाज़ का भी हक़ अदा नहीं कर रहे और फिर ऐसे लोग इस श्रेणी में शामिल होते हैं जिसका मैंने पहले वर्णन किया कि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि ऐसे लोगों के लिए उनकी नमाज़ें हलाकत का कारण बन जाती हैं। अत: अपनों से भी मुहब्बत और प्यार में आप ने बढ़ना है और ग़ैरों से भी पहले से बढ़कर संबंध भी क़ायम करने हैं और इस सम्बन्ध में बढ़ते चले जाना है और दुनिया को यह बताना है कि इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा है।

अल्लाह तआला आप लोगों को इस मस्जिद का हक़ अदा करने की तौफ़ीक़ दे

शेष पृष्ठ 9 पर

ख़ुत्बः जुमअः

हे रसूलुल्लाह! इसके बावजूद कि मैं उन सब में छोटी आयु का हूँ मैं आपका मददगार रहूँगा।(हज़रत अली)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान सहाबी ख़लीफा राशिद और दामाद अब्बू तुराब,हज़रत अली अलमुर्तज़ा रज़ियल्लाहु तआला अन्हु के प्रशंनीय गुणों का वर्णन

एक रिवायत के अनुसार हज़रत अली रज़ि ने हज़रत ख़दीजा रज़ि के इस्लाम स्वीकार करने के अगले दिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत ख़दीजा रज़ि को नमाज़ पढ़ते देखा।

हज़रत अली ने वह रात गुज़ारी और अगली सुबह इस्लाम स्वीकार कर लिया, उस समय आप की उम्र 13 वर्ष थी

चार मरहूमीन आदरणीय डाक्टर ताहिर महमूद साहिब शहीद मढ़ बलोचां ननकाना साहिब पाकिस्तान, आदरणीय जमालुद्दीन महमूद साहिब आफ़ सैरालियून,

अदरणीया अमतुस्सलाम साहिबा पत्नी चौधरी सलाहुद्दीन साहिब मरहूम भूतपूर्व नाज़िम जायदाद और मुशीर क़ानूनी रब्वाह और आदरणीया मंसूरा बुशरा साहिबा माता डाक्टर लतीफ़ अहमद क़ुरैशी साहिब का वर्णन और नमाज़ जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 27 नवम्बर 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

आज ख़ुलफ़ाए राशिदीन के बारे में हज़रत अली बिन अब्बू तालिब रज़ि के वर्णन से शुरू करूँगा। हज़रत अली बिन अबू तालिब बिन अब्दुल मुतलिब बिन हाशिम। उनके पिता का नाम अब्द मुनाफ़ था जिनका उपनाम अबू तालिब था। आप की माता का नाम फ़ातिमा पुत्री असद बिन हाशिम था। आप आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के नबूव्वत के दावा से दस वर्ष पहले पैदा हुए थे। हज़रत अली रज़ियल्लाहु तआला अन्हु की शक्ल के बारे में वर्णन करते हैं कि आप का क़द दरमियाना था। आँखें काली थीं। आप का शरीर भारी था। कंधे चौड़े थे।

(अलअसबा फ़ी तमीज़िस्सहाबा ले इब्ने हिज्र असकलानी, भाग 04 पृष्ठ 464 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1995 ई)(उसुदुल गाबाबह लेमआरिफ़ अलअसहाबा ले इब्ने असीर ,भाग 04 पृष्ठ 87- 88 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003 ई (अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफितिल असहाब, भाग 03 पृष्ठ 218 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 2002 ई)

हज़रत अली की माता ने आप का नाम अपने पिता के नाम पर असद रखा था और आप के जन्म के समय अबू तालिब घर पर मौजूद न थे। जब अबू तालिब वापस आए तो उन्होंने आप का नाम असद के बजाय अली रख दिया। हज़रत अली के तीन भाई और दो बहनें थीं। उनके भाई तालिब, अक़ील, जाफ़र और बहनें उम्म अहानी और जुमअनह। उनमें तालिब और जुमअना के अतिरिक्त बाक़ी सब ने इस्लाम स्वीकार कर लिया था।

(तारीख़ुल ख़मीस भाग 1 पृष्ठ 295 से 297 भाग 2 पृष्ठ 421 दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2009 ई)

हज़रत अली का उपनाम अबुल हसन, अबू-सबतैन और अबो तुराब था।

(उसुदुल गाबाबह ले मअरफितस्सहाबा ले इब्ने असीर, भाग 04 पृष्ठ 88 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत लबनान 2003 ई)(सही अल बुख़ारी ,किताबुस्सलात ,बाब नौमुर्रजाल फिल मस्जिद हदीस 441)

सही बुख़ारी की रिवायत के अनुसार हज़रत सहल बिन सअद रज़ि वर्णन करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हज़रत फ़ातिमा रज़ि के घर आए तो हज़रत अली को घर में न पाया। पूछा: तुम्हारे चाचा का पुत्र कहाँ है? हज़रत फ़ातिमा रज़ि ने कहा मेरे और उनके मध्य कोई बात हो गई थी तो वह मुझ से नाराज़ हो कर चले गए और क़ैलूला भी मेरे पास नहीं किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी आदमी से कहा देखो वह कहाँ हैं? वह आया और उस ने कहा कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम वह मस्जिद में सोए हुए हैं तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तशरीफ़ लाए, मस्जिद में चले गए और हज़रत अली वहां लेटे हुए थे। उनके पहलू से उनकी चादर हटी हुई थी और कुछ मिट्टी पहलू पर, कमर पर लग गई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मिट्टी पोंछी और फ़रमाया उठो हे अबूतराब उठो हे अबूतराब।

(सही अल बुख़ारी ,किताबुस्सलताल ,बाब नौम रिजालुन फिल मस्जिद, हदीस 441)

उस समय से वह अबूतराब के उपनाम से पुकारे जाने लगे। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कफ़ालत (संरक्षण) में किस तरह आए? इस बारे में वर्णन होता है मुजाहिद बिन जबर अबुल हज्जाज वर्णन करते हैं कि क़ुरैश को एक बड़ी कठिनाई पेश आना अल्लाह तआला की ओर से हज़रत अली पर इनाम और ख़ैर का कारण बना। हज़रत अबू तालिब के बच्चे अधिक थे। वहां अकाल पड़ा था। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने चाचा हज़रत अब्बास रज़ि से जो बनू हाशिम में अधिक ख़ुशहाल थे फ़रमाया कि हे अब्बास !आपका भाई अबू तालिब अधिक सन्तान रखने वाला है। इस अकाल से लोगों की जो हालत है वह आप देख रहे हैं। आप मेरे साथ चलें ताकि हम उनके बोझ में कुछ कमी कर दें। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उनके बेटों में से एक में ले लेता हूँ और हज़रत अब्बास रज़ि को कहा कि एक आप ले लें। आप ने फ़रमाया हम इन दोनों के लिए हज़रत अबू तालिब की ओर से काफ़ी हो जाएँगे। हज़रत अब्बास ने कहा ठीक है। दोनों हज़रत अबू तालिब के पास आए और कहा हम चाहते हैं कि आपके बोझ में कुछ कमी कर दें यहां तक कि लोगों की वह हालत जाती रहे जिसमें वे उस समय पीड़ित हैं। हज़रत अबू तालिब ने कहा कि अक़ील को मेरे पास रहने दो उस के अतिरिक्त जो चाहे करो। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली रज़ि का हाथ पकड़ कर उन्हें अपने साथ मिला लिया और हज़रत अब्बास रज़ि ने जाफ़र को लिया और उसे अपने साथ मिला लिया। हज़रत अली रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ रहे यहां तक कि अल्लाह तआला ने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नबी के रूप में मबऊस फ़र्मा दिया। फिर हज़रत अली ने आप का अनुकारण धारण किया और आप पर ईमान ले आए और आप की तसदीक़ की और हज़रत जाफ़र रज़ि हज़रत अब्बास रज़ि के पास रहे यहां तक कि उन्होंने अर्थात हज़रत जाफ़िर रज़ि ने भी इस्लाम स्वीकार कर लिया और वह अर्थात हज़रत अब्बास रज़ि फिर हज़रत जाफ़िर रज़ि से बेनयाज़ हो गए।

(अत्तिबरी, भाग 2 पृष्ठ 225 वर्णन अलख़बर अमा कान मिन अमर नबी उल्लाह प्रकाशन दारुल फ़िक्र लबनान 2002 ई)

यह पहली तो तारीख़ तबरी की रिवायत थी। इसी बात का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने उस को इस प्रकार वर्णन फ़रमाया है कि ''अबू तालिब एक बहुत इज़्ज़त वाले आदमी थे परन्तु ग़रीब थे और बड़ी तंगी से उनका गुज़ारा चलता था। विशेषता उन दिनों में जब कि मक्का में एक अकाल की अवस्था थी। उनके दिन बहुत ही कष्ट में कटते थे। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब अपने चचा की इस कष्ट को देखा तो अपने दूसरे चचा अब्बास से

एक दिन फ़रमाने लगे चाचा !अलिफ आपके भाई अबू तालिब की मईशत तंग है। क्या अच्छा हो कि उनके बेटों में से एक को आप अपने घर ले जाएं और एक को मैं ले आऊँ। अब्बास ने इस तजवीज़ से सहमति की और फिर दोनों मिलकर अबू तालिब के पास गए और उनके सामने यह दरख़ास्त पेश की। उनको अपनी औलाद में अक़ील से बहुत मुहब्बत थी।'' अबू तालिब को अक़ील से बहुत मुहब्बत थी। ' 'कहने लगे अक़ील को मेरे पास रहने दो और बाक़ियों को यदि तुम्हारी इच्छा है तो ले जाओ। इसलिए जाफ़र को अब्बास अपने घर ले आए और अली को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपने पास ले आए। हज़रत अली की उम्र उस समय क़रीबन छ: सात वर्ष की थी। इसके बाद अली हमेशा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास रहे।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन अज़ हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब, पृष्ठ111)

हज़रत अली के इस्लाम स्वीकार करने के बारे में इब्ने इसहाक़ से यह रिवायत है कि हज़रत अली बिन अबू तालिब हज़रत ख़दीजा रज़ि के इस्लाम लाने और आपके साथ नमाज़ पढ़ने के एक दिन बाद आए। रावी कहते हैं कि उन्होंने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत ख़दीजा रज़ि को नमाज़ पढ़ते हुए देखा तो हज़रत अली ने कहा हे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! यह क्या है? तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया यह अल्लाह का धर्म है जो उसने अपने लिए चुन लिया है और रसूलों को इस के साथ मबऊस फ़रमाया। अत:मैं तुम्हें अल्लाह और उस की इबादत की तरफ और लात और उज़्ज़ा के इन्कार की ओर बुलाता हूँ। इस पर हज़रत अली ने आप से कहा यह ऐसी बात है जिसके बारे में आज से पहले मैं ने कभी नहीं सुना। मैं इस बारे में कोई बात नहीं कर सकता जब तक अबू तालिब से इस का वर्णन न कर लूं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नापसंद फ़रमाया कि आप के एलाने नबूवत से पहले यह राज़ खुल जाए। इसलिए आप ने फ़रमाया कि अली! यदि तुम इस्लाम नहीं स्वीकार करते तो इस बात को छुपा कर रखो। अत: हज़रत अली ने वह रात गुज़ारी फिर अल्लाह ने हज़रत अली के दिल में इस्लाम को दाख़िल कर दिया और अगली सुबह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुए और वर्णन किया कि हे मुहम्मद (स) रात को आपने मेरे सामने क्या चीज़ पेश फ़रमाई थी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम इस बात की गवाही दो कि अल्लाह के सिवा कोई उपास्य नहीं। वह एक है उसका कोई शरीक नहीं और लात और उज़्ज़ा का इन्कार करो और अल्लाह तआला के शरीकों से दूरी का इज़हार करो। हज़रत अली ने ऐसा ही किया और इस्लाम स्वीकार कर लिया। हज़रत अली अबू तालिब के ख़ौफ़ से पोशीदा तौर पर आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया करते थे और उन्होंने अपना इस्लाम छुपा कर रखा।

(उसदुलग़ाब, भाग 4 पृष्ठ 88-89 अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2003 ई)

हालाँकि रहते भी वहीं थे क्योंकि रिवायतों में तो यही है। बहरहाल उसुदुल ग़ाबाबह की यह रिवायत है।

हज़रत ख़दीजा रज़ि के बाद सबसे पहले ईमान लाने वाले हज़रत अली थे। इस समय हज़रत अली की उम्र तेरह वर्ष थी। कुछ दूसरी रिवायतों में पंद्रह, सोला और अठारह वर्ष उम्र का भी वर्णन मिलता है।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफितिल असहाब, भाग 3 पृष्ठ 200 वर्णन अली बिन अबी तालिब, दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 2002 ई)

सीरत लिखने वालों ने यह बेहस भी उठाई है कि मर्दों में से पहले कौन ईमान लाया था। हज़रत अबू बकर रज़ि या हज़रत अली या हज़रत ज़ेद रज़ि। कुछ इस का यह हल निकालते हैं कि बच्चों में से हज़रत अली और बड़ों में से हज़रत अबू बकर रज़ि और ग़ुलामों में से हज़रत ज़ैद रज़ि। इस बारे में हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने भी अपना एक दृष्टिकोण पेश किया है। आप कहते हैं कि "हज़रत ख़दीजा रज़ि के बाद मर्दों में सबसे पहले ईमान लाने वाले के सम्बन्ध में इतिहासकारों में मतभेद है। कुछ हज़रत अबूबकर अब्दुल्लाह बिन अबी क़हाफ़ा का नाम लेते हैं। कुछ हज़रत अली रज़ि का नाम लेते हैं जिन की उम्र उस समय सिर्फ़ दस वर्ष की थी और कुछ आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आज़ाद किया हुआ ग़ुलाम हज़रत ज़ैद बिन हारिसा का। परन्तु हमारे निकट यह झगड़ा फ़ुज़ूल है। हज़रत अली और ज़ैद बिन हारिसा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर के आदमी थे और आप के बच्चों की तरह आप के साथ रहते थे। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमाना और उनका ईमान लाना, बल्कि उनकी ओर से तो शायद किसी कथनीय इक़रार की भी ज़रूरत न थी। अत: उनका नाम बीच में लाने की ज़रूरत नहीं।' अर्थात आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का फ़रमाना और उनका ईमान लाना ,से कोई नहीं अन्तर पड़ता एक ही बात है। इस के लिए किसी कथनीय इक़रार की ज़रूरत नहीं "अत: उनका नाम बीच में लाने की ज़रूरत नहीं और जो बाक़ी रहे इन सब में से हज़रत अब्बू बकर रज़ि मुस्लिमा तौर पर मुक़द्दम हैं और ईमान लाने वालों में से प्रथन थे। "

(सीरत ख़ातमन्नबय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब,पृष्ठ 121)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु फ़रमाते हैं कि "हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम को अल्लाह तआला से मांगने पर एक मददगार मिला था परन्तु मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शान देखो कि आपको बिन मांगे मददगार मिल गया।' यहां हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि हज़रत ख़दीजा रज़ि का वर्णन फ़रमाना चाह रहे हैं और आप बता रहे हैं कि हज़रत ख़दीजा आपकी मददगार थीं। कहते हैं देखो! मुहम्मद रसूलुल्लाह की शान देखो !!कि आपको बिन मांगे मददगार मिल गया''अर्थात आपकी वह पत्नी जिसके साथ आपको बेहद मुहब्बत थी सबसे पहले आप पर ईमान ले आई। क्योंकि हर व्यक्ति का मज़हब और अक़ीदा आज़ाद होता है और कोई किसी को ज़बरदस्ती मनवा नहीं सकता, इसलिए संभव था कि जब आपने हज़रत ख़दीजा रज़ि से ख़ुदा तआला की पहली वह्यी का वर्णन किया तो वह आपका साथ न देतीं और कह देतीं कि मैं अभी सोच समझ कर कोई क़दम उठाऊँगी लेकिन नहीं। हज़रत ख़दीजा रज़ि ने बिना किसी देरी, और शंका के और आपके दावा का समर्थन किया की और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह चिन्ता कि शायद ख़दीजा रज़ि मुझ पर ईमान न लाए दूर हो गई और सबसे पहले ईमान लाने वाली हज़रत ख़दीजा रज़ि ही हुईं। उस समय ख़ुदा तआला अर्श पर बैठा कह रहा था।أَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ हे मुहम्मद सल्लल्लाहो वसल्लम! तुझे ख़दीजा रज़ि के साथ प्यार था और मुहब्बत थी और तेरे हृदय में यह विचार था कि कहीं ख़दीजा रज़ि तुझे छोड़ न दे और तू इस फ़िक्र में था कि ख़दीजा रज़ि मुझ पर ईमान लाती है या नहीं। परन्तु क्या हमने तेरी ज़रूरत को पूरा न किया?''इसके बाद हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि "इस के बाद जब आपके घर में ख़ुदा तआला की वह्यी के सम्बन्ध में बातें हुईं तो ज़ैद बिन हारिस ग़ुलाम जो आपके घर में रहता था आगे बढ़ा और उसने कहा हे अल्लाह के रसूल! मैं आप पर ईमान लाता हूँ। इसके बाद हज़रत अली जिनकी उम्र उस समय ग्यारह वर्ष की थी और वह अभी बिल्कुल बच्चा ही थे और वह दरवाज़ा के साथ खड़े हो कर इस बात को सुन रहे थे जो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत ख़दीजा रज़ि के मध्य हो रही थी। जब उन्होंने यह सुना कि ख़ुदा का पैग़ाम आया है तो वह अली जो एक होनहार और होशियार बच्चा था। वह अली जिसके अंदर नेकी थी। वह अली जिसके नेकी की भावनाऐं जोश मारती रहती थीं परन्तु बढ़ न पाई थीं। वह अली जिसके एहसासात बहुत बुलंद थे परन्तु अभी तक सीने के अन्दर दबे हुए थे और वह अली जिसके अंदर अल्लाह तआला ने स्वीकारियता का माद्दा रखा हुआ था परन्तु अभी तक उसे कोई मौक़ा न मिल सका था उसने जब देखा कि अब मेरे जज़बात के उभरने का समय आ गया है। उसने जब देखा कि अब मेरे एहसासात के बढ़ने का मौक़ा आ गया है। उसने जब देखा कि अब ख़ुदा मुझे अपनी ओर बुला रहा है तो वह बच्चा सा अली अपने दर्द से मामूर सीने के साथ लज्जाता और शर्माता हुआ आगे बढ़ा और उसने वर्णन किया कि हे अल्लाह के रसूल ! जिस बात पर मेरे चाचा ईमान लाया है और जिस बात पर ज़ैद ईमान लाया है उस पर में भी ईमान लाता हूँ।

(रसूल करीम की ज़िंदगी के समस्त अहम वाक़ियात..., अनवारुल ऊलूम,भाग 19 पृष्ठ 127-128)

तारीख़ तिबरी में लिखा है कि जब नमाज़ का समय होता तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मक्का की घाटियों की ओर चले जाते और हज़रत अली भी आपके चाचा अबू तालिब और अन्य चाचाओं और समस्त क़ौम से छुप कर आपके साथ हो लेते और दोनों वहां नमाज़ अदा करते। शाम को वापिस तशरीफ़ ले आते। यह सिल्सिला यूंही चलता रहा। फिर एक दिन अबू तालिब ने इन दोनों को नमाज़ पढ़ते हुए देख लिया और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि हे भतीजे! यह कौन सा धर्म है जिसकी पैरवी करते हुए मैं आपको देख रहा हूँ। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम फ़रमाया: हे मेरे चाचा यह अल्लाह का धर्म है और उस के फ़रिश्तों का धर्म है और उस के रसूलों का धर्म है और हमारे बाप हज़रत इब्राहीम का धर्म है। या इस से मिलता-जुलता कुछ फ़रमाया। इसी तरह फ़रमाया

कि अल्लाह तआला ने इस के साथ मुझे लोगों की ओर मबऊस फ़रमाया है और हे चाचा तू इस बात का सबसे अधिक हक़दार है कि मैं तुझे उस की नसीहत करूँ और तुझे इस हिदायत की ओर बुलाऊँ और तू इस बात का अधिक योग्य है कि मुझे स्वीकार करे और मेरी मदद करे या इस तरह की बात फ़रमाई। इस पर अबू तालिब ने कहा हे मेरे भतीजे मैं अपने और अपने बाप दादाओं के धर्म और जिस पर वे थे उस को छोड़ने की ताक़त नहीं रखता लेकिन अल्लाह की क़सम! मैं जब तक ज़िंदा हूँ तुम्हें कोई ऐसी चीज़ नहीं पहुँचेगी जिसे तू नापसंद करता हो।

(तारीख़ अत्तिबरी ,भाग-2 पृष्ठ 225 बाब वर्णन अलख़बर अमा कान मन अमर नबीउल्लाह इब्तिदा दारुल फ़िक्र 2002 ई)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने इस घटना को इस तरह वर्णन फ़रमाया है कि "एक बार आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अली मक्का की किसी घाटी में नमाज़ पढ़ रहे थे कि अचानक इस ओर से अबू तालिब का गुज़र हुआ। अबू तालिब को अभी तक इस्लाम की कोई ख़बर न थी। इसलिए वह खड़ा हो कर निहायत हैरत से यह नज़ारा देखते रहे। जब आप नमाज़ ख़त्म कर चुके तो उसने कहा भतीजे ! यह क्या धर्म है जो तुमने धारण किया है? आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया। चाचा यह दीने इलाही और दीने इब्राहीम है और आप ने अबू तालिब को थोड़ा तौर पर इस्लाम की दाअवत दी लेकिन अबू तालिब ने यह कह कर टाल दिया कि मैं अपने बाप दादा का मज़हब नहीं छोड़ सकता परन्तु साथ ही अपने पुत्र हज़रत अली की ओर सम्बोधित हो कर बोला। हाँ पुत्र तुम बे-शक मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) का साथ दो क्योंकि मुझे यक़ीन है कि वह तुमको सिवाए नेकी के और किसी ओर नहीं बुलाएगा।

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ,पृष्ठ 127)

अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का अपने रिशतेदारों को डराने का वर्णन एक जगह इस प्रकार मिलता है। हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ि वर्णन करते हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह आयत नाज़िल हुई कि وَأَنْذِرْ عَشِيرَتَكَ الْأَقْرَبِينَ (अश्शोअरा 215) और तू अपने ख़ानदन अर्थात रिश्तेदारों को डरा। आप ने फ़रमाया हे अली हमारे लिए एक साअ खाने के साथ बकरी की रान तैयार करो और एक रिवायत में साव के बजाय मुद्द का शब्द मिलता है। एक साअ चार मुद्द का था अर्थात कुछ अढ़ाई सैर वज़न से कुछ कम या अढ़ाई किलो कह सकते हैं और यहां यह भी लिखा है कि कूफ़ा वाले और इराक़ का साअ आठ मुद्द का होता था अर्थात चार सैर का या साढ़े चार सैर का लेकिन बहरहाल बहुत थोड़ी मिक़दार। जितना भी हो अढ़ाई सैर हो या चार सेर हो वंश के लोगों को बुलाना था, दावत करनी थी उस के लिए खाना तैयार करना था और हमारे लिए एक बड़ा प्याला दूध का तैयार करो। फिर बनू अब्दुल मुतलिब को जमा करो। हज़रत अली कहते हैं मैं ने ऐसा ही किया। वे सब जमा हुए। कोई चालीस लोग थे। एक अधिक या एक कम था। उनमें आप के चाचा अबू तालिब और हमज़ा और अब्बास और अबूलहब भी थे। मैंने उनके सामने खाने का वह बड़ा बर्तन पेश किया तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस में से गोश्त का एक टुकड़ा लिया अपने दाँतों से उसे काटा। फिर उस प्याले के अतराफ़ में उसे बरकत देने के लिए बिखेर दिया और फ़रमाया अल्लाह के नाम के साथ खाओ। लोगों ने खाया यहां तक कि वे तृप्त हो गए। अल्लाह की क़सम! मैं ने इन सब के लिए जो पेश किया था वह केवल एक आदमी खा सकता था। फिर आप ने फ़रमाया लोगों को पिलाओ। इसलिए मैं दूध का वह पियाला लाया। उन्होंने पिया यहां तक कि सब के सब तृप्त हो गए। अल्लाह की क़सम ! उनमें से केवल एक व्यक्ति सारा पी सकता था। फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इरादा फ़रमाया कि हाज़िरीन से बात करें तो अबूलहब ने शीघ्रता से बोलना शुरू कर दिया और कहा देखो तुम्हारे साथी ने तुम पर कैसा जादू किया है फिर वे लोग बिखर गए और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उनसे बात न कर सके। अगले दिन आप ने फ़रमाया। हे अली जो खाने और पीने की वस्तु तुमने कल तैयार की थी वैसा ही तैयार करो। मैं ने ऐसा ही किया। फिर मैंने उन लोगों को जमा किया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने ऐसे ही किया जैसा कि कल किया था अर्थात खाने को बरकत बख़शी थी। फिर उन लोगों ने खाया और पिया यहां तक कि ख़ूब तृप्त हो गए। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया हे बनू अब्दुल मुतलिब मैं अरब के किसी नौजवान को नहीं जानता जो अपनी क़ौम के लिए इस से बेहतर बात लेकर आया हो जो मैं तुम्हारे लिए लाया हूँ। मैं तुम्हारे लिए दुनिया और आख़िरत का मामला लेकर आया हूँ। फिर फ़रमाया इस पर कौन मेरी मदद करेगा? हज़रत अली कहते हैं इस पर सब लोग ख़ामोश रहे और मैंने वर्णन किया हे अल्लाह के रसूल! बावजूद इस के कि मैं इन सब में छोटी आयु का हूँ मैं आपका मददगार हूँगा।

(सुबुलुल हुदा वर्‌शिाद , भाग 2 पृष्ठ 324 फ़ी अमर अल्लाह सुब्हाना व तआला दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1993 ई (लुग़ातुल अहदीस, भाग 2 पृष्ठ 648 ज़ेर लफ़्ज़ "साव'')

सीरत खातमन्नबिय्यीन में इस बात का वर्णन करते हुए हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ने इस तरह लिखा है कि "आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली से इरशाद फ़रमाया कि एक दअवत का इंतिज़ाम करो और इस में बनू अब्दुल मुतलिब को बुलाओ ताकि इस माध्यम से उन तक सच्चाई का पैग़ाम पहुंचाया जाए। इसलिए हज़रत अली ने दअवत का इंतिज़ाम किया और आप ने अपने सब क़रीबी रिश्तेदारों को जो उस समय कम से कम चालीस लोग थे इस दावत में बुलाया। जब वे खाना खा चुके तो आप ने कुछ तक़रीर शुरू करनी चाही परन्तु बदकिस्मत अबूलहब ने कुछ ऐसी बात कह दी जिससे सब लोग चले गए। इस पर आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली से फ़रमाया कि यह मौक़ा तो जाता रहा। अब फिर दअवत का इंतिज़ाम करो। इसलिए आप के रिश्तेदार फिर जमा हुए और आप ने उन्हें इस प्रकार मुख़ातिब किया कि हे अब्दुल मुतलिब! देखो मैं तुम्हारी ओर वह बात लेकर आया हूँ कि इस से बढ़कर अच्छी बात कोई व्यक्ति अपने क़बीला की ओर नहीं लाया। मैं तुम्हें ख़ुदा की ओर बुलाता हूँ। यदि तुम मेरी बात मानो तो तुम धर्म तथा दुनिया की बेहतरीन नेअमतों के वारिस बनोगे। अब बताओ इस काम में मेरा कौन मददगार होगा? सब ख़ामोश थे और हर ओर मज्लिस में एक सन्नाटा था कि अचानक एक ओर से एक तेरह वर्ष का दुबला पुतला बच्चा ,जिसकी आँखों से पानी बह रहा था उठा और इस प्रकार कहने लगा। यद्यिप मैं सब में कमज़ोर हूँ और सब में छोटा हूँ परन्तु मैं आप का साथ दूँगा। यह हज़रत अली की आवाज़ थी। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली के यह शब्द सुने तो अपने रिश्तेदारों की ओर देखकर फ़रमाया यदि तुम जानो तो इस बच्चे की बात सुनो और उसे मानो। हाज़िरीन ने यह नज़ारा देखा तो बजाय नसीहत प्राप्त करने के सब खिल-खिला कर हंस पड़े और अबू लहब अपने बड़े भाई अबू तालिब से कहने लगा। लो अब मुहम्मद तुम्हें यह हुक्म देता है कि तुम अपने पुत्र का अनुकरण करो। और फिर ये लोग इस्लाम और आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कमज़ोरी पर हंसी उड़ाते हुए विदा हो गए।''

(सीरत ख़ातमन्निबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ,पृष्ठ 128-129)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि इस घटना का वर्णन इस प्रकार फ़रमाते हैं कि "हज़रत अली रज़ि की घटना है वह भी ग्यारह वर्ष के थे।' बच्चों को भी इस को ग़ौर से सुनना चाहिए''जब वह धर्म के समर्थन के लिए खड़े हुए। जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को वह्यी हुई तो आपने एक दावत की जिसमें मक्का के समस्त बड़े बड़े उमरा को बुलाया और उन्हें खाना खिलाया। फिर आप खड़े हुए और फ़रमाया कि मैं कुछ अपने दावा की बातें करना चाहता हूँ। इस पर सारे उठकर भाग गए। यह देखकर हज़रत अली रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और कहने लगे भाई! आपने यह क्या-किया? आप जानते हैं कि यह बड़े दुनिया-दार लोग हैं उनको पहले सुनाना था और फिर खाना खिलाना था। यह बेईमान तो खाना खा कर भाग गए क्योंकि यह खाने के भूखे हैं। यदि आप पहले बातें सुनाते तो चाहे दो घंटा सुनाते वे ज़रूर बैठे रहते। फिर उनको खाना खिलाते। इसलिए रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फिर इस तरह किया। फिर पुन: उनको बुलाया और उनकी दावत की लेकिन पहले कुछ बातें सुना लीं और फिर खाना खिलाया। इस के बाद आप खड़े हुए और आप ने फ़रमाया लोगो! मैंने तुम्हें ख़ुदा की बातें सुनाई हैं। क्या कोई तुम में से है जो मेरी मदद करे और इस काम में मेरा हाथ बटाए? मक्का के सारे बड़े बड़े आदमी बैठे रहे सिर्फ़ हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और कहने लगे हे मेरे चाचा के पुत्र मैं हूँ। आपकी मदद करूँगा। आपने समझा कि यह तो बच्चा है। इसलिए फिर आप खड़े हुए और फ़रमाया लोगो! क्या तुम में से कोई है जो मेरी मदद करे? फिर सारे बुड्ढे बुड्ढे बैठे रहे और वह ग्यारह वर्ष का बच्चा खड़ा हो गया और उसने कहा कि मेरे चाचा के पुत्र मैं जो हूँ मैं तेरी मदद करूँगा। फिर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने समझा कि ख़ुदा के नज़दीक जवान यही ग्यारह साला बच्चा है बाक़ी बुड्ढे सब बच्चे हैं। "उनमें कोई ताक़त नहीं है यही बच्चा है जो अक़्लमंद है'' इसलिए आपने

उनको अपने साथ मिला लिया और फिर वही अली आख़िर तक आप के साथ रहे और फिर आप के बाद ख़लीफ़ा भी हुए और उन्होंने धर्म की बुनियाद डाली। इसी तरह आपकी नस्ल को भी अल्लाह तआला ने नेक बनाया और बारह नस्लों तक बराबर उनमें बारह इमाम हुए।''

(इफ़्तिताही तक़रीर जलसा सालाना 1955 ई, अनवारुल ऊलूम, भाग 25 पृष्ठ187-188)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु तआला अन्हु एक जगह हज़रत अली रज़ि का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि

''हज़रत अली जब ईमान लाए तो अभी बच्चे ही थे और वह भी यह समझ कर ईमान लाए थे कि मुझे इस्लाम के लिए हर किस्म की मुसीबतें बर्दाश्त करनी पड़ेंगे।''बच्चे थे लेकिन यह समझ कर ईमान लाए थे कि क़ुर्बानी मुझे देनी पड़ेगी''यहां तक कि यदि जान क़ुर्बान करने का समय आया तो मुझे अपनी जान भी ख़ुदा तआला की राह में पेश करनी पड़ेगी। हदीसों में आता है कि रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी रिसालत के आरम्भिक दिनों में एक दावत की जिसमें बनू अब्दुल मुतलिब को बुलाया ताकि उन तक पैग़ाम-ए-हक़ पहुंचाया जाए। इसलिए आप के बहुत से रिश्तेदार इस दावत में शरीक हुए। जब सब लोग खाना खा चुके तो आप ने खड़े हो कर तक़रीर करनी चाही परन्तु अबूलहब ने इन सब लोगों को मुंतशिर कर दिया और वे आप की बात सुने बग़ैर अपने घरों को चले गए। आप बहत हैरान हुए कि ये अच्छे लोग हैं जो दावत खा कर भी बात नहीं सुनते परन्तु आप निराश नहीं हुए बल्कि आप ने हज़रत अली से फ़रमाया कि पुन: उनकी दअवत की जाए। इसलिए पुन: उन सबको खाने पर बुलाया गया। जब वे तृप्त हो कर खा चुके तो आप खड़े हुए और फ़रमाया कि देखो अल्लाह तआला का यह तुम पर कितना बड़ा एहसान है कि उसने अपना नबी तुम्हारे अन्दर भेजा है। मैं तुम्हें ख़ुदा की ओर बुलाता हूँ। यदि तुम मेरी बात मानोगे तो तुम धर्म और संसार की नेअमतों के वारिस क़रार पाओगे। क्या तुम में से कोई है जो इस काम में मेरा मददगार बने? यह सुनकर सारी मज्लिस पर सन्नाटे जैसी हालत तारी हो गई। परन्तु अचानक एक कोने से एक छोटी उम्र का बच्चा उठा और उसने कहा कि जबकि मैं एक कमज़ोर तरीन आदमी हूँ और उम्र में सबसे छोटा हूँ परन्तु मैं आपका साथ दूँगा। यह बच्चा हज़रत अली थे जिन्हों ने उस समय इस्लाम का समर्थन की घोषणा की।

(तफ़सीर कबीर, भाग 7 पृष्ठ24- 25)

हज़रत अली की क़ुर्बानी का घटना जो आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हिजरत के समय हज़रत अली ने वर्णन की है। इस का भी वर्णन इस तरह मिलता है कि मक्का वालों ने आपस में मश्वरा कर के जब रसूल अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर पर आक्रमण कर के आपको क़ैद करने या वध करने का मन्सूबा बनाया तो वह्यी इलाही से आपको दुश्मनों के इस इरादे की सूचना हो गई। अल्लाह तआला ने आपको हिजरत मदीना की आज्ञा प्रदान फ़रमाई तो आप ने हिजरत की तैयारी की और हज़रत अली को इरशाद फ़रमाया कि वह आज की रात आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बिस्तर पर लेटें। हज़रत अली ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वही लाल चादर ओढ़ कर रात गुज़ारी जिसमें आप सोया करते थे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्ने भाग 01 पृष्ठ 176 वर्णन ख़ुरूज रसूलुल्लाह दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया बेरूत 1990 ई)

मुश्रेकीन का वह गिरोह जो कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की घात लगाए हुए बैठा था वह सुबह के समय रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के घर में दाख़िल हुआ और हज़रत अली बिस्तर से उठे। जब वह हज़रत अली के क़रीब हुए तो उन लोगों ने आपको पहचान लिया और पूछा तुम्हारा साथी कहाँ है? आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में पूछा। हज़रत अली ने कहा कि मैं नहीं जानता। क्या मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर निगरान था? तुमने उन्हें मक्का से निकल जाने को कहा और वह चले गए। मुशरिकों ने आपकी डाँट डपट की और मार पीट किया। पकड़ कर ख़ाना काबा में ले गए और कुछ देर कैद में रखा। फिर आपको छोड़ दिया।

(तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 256 वर्णन अलख़बर अमाकान मन अमर नबीयुल्लाह दारुल फ़िक्र बेरूत 2002 ई)

फिर एक और सीरत की किताब में लिखा है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इरशाद के अनुसार हज़रत अली तीन दिन के बाद मक्का वालों की अमानतें लौटा कर हिजरत कर के नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास पहुंचे और आपके साथ क़बा में कुलसूम बिन हिदं के यहाँ निवासी थे।

(अल सीरतुल हल्बिया अन्नवबिय्या ले इब्ने हश्शाम ,पृष्ठ 348 बाब हिजरते रसूल दारुल क़ुतुब अल्इल्मिया 2001 ई)

सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन में इस घटना का जो हिजरत के दौरान हुई उस का वर्णन इस प्रकार आया है कि "रात के अन्धेरे का समय था और ज़ालिम क़ुरैश जो विभिन्न क़बीलों से संबंध रखते थे अपने ख़ूनी इरादे के साथ आप के घर के इर्द-गिर्द जमा हो कर आप के घर का घेराव कर चुके थे और प्रतीक्षा कर रहे थे कि सुबह हो या आप आपने घर से निकलें तो आप पर एक दम आक्रमण कर के वध कर दिया जाए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास कुछ कुफ़्फ़ार की अमानतें पड़ी थीं क्योंकि बावजूद बहुत विरोध के अक्सर लोग अपनी अमानतें आप की सच्चाई और अमानत के कारण से आप के पास रखवा दिया करते थे। अत: आप ने हज़रत अली को इन अमानतों का हिसाब किताब समझा दिया और ताकीद की कि बिना अमानतें वापस किए मक्का से न निकलना। इस के बाद आप ने उनसे फ़रमाया कि तुम मेरे बिस्तर पर लेट जाओ और तसल्ली दी कि उन्हें ख़ुदा के फ़ज़ल से कोई हानि नहीं पहुँचेगी। वह लेट गए और आप ने अपनी चादर जो लाल रंग की थी उनके ऊपर ओढ़ा दी। इस के बाद आप अल्लाह का नाम लेकर अपने घर से निकले। उस समय घेराव करने वाले आप के दरवाज़े के सामने मौजूद थे परन्तु चूँकि उन्हें यह विचार नहीं था कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इतनी जल्दी रात के पहले हिस्सा में ही घर से निकल आएँगे वह उस समय इस क़दर ग़फ़लत में थे कि आप उन विरोधियों के सिरों पर मिट्टी डालते हुए।" आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उन विरोधियों के सिरों पर ख़ाक डालते हुए'' उनके मध्य से निकल गए और उनको ख़बर तक न हुई। अब आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ामोशी के साथ परन्तु शीघ्रता मक्का की गलियों में से गुज़र रहे थे और थोड़ी ही देर में आबादी से बाहर निकल गए और सौर नामक गुफा की पनाह ली। हज़रत अबू बकर रज़ि के साथ पहले ही समस्त बात तय हो चुकी थी। वह भी रास्ता में मिल गए। सौर नामक गुफा जो इसी घटना के कारण से इस्लाम में एक पवित्र यादगार समझी जाती है मक्का से दक्षिण की तरफ अर्थात मदीना से दूसरी तरफ तीन मील की दूरी पर एक बंजर और वीरान पहाड़ी के ऊपर ख़ासी बुलंदी पर स्थित है और इस का रास्ता भी बहुत कठिन है।'' मदीना की ओर नहीं है बल्कि विपरीत दिशा में है।''वहां पहुंच कर पहले हज़रत अबू बकर रज़ि ने अन्दर घुस कर जगह साफ़ की और फिर आप भी अंदर तशरीफ़ ले गए। दूसरी ओर वे क़ुरैश जो आप के घर का घेराव किए हुए थे वे थोड़ी थोड़ी देर के बाद आप के घर के अंदर झांक कर देखते थे तो हज़रत अली को आप की जगह पर लेटा देखकर सन्तुष्ट हो जाते थे लेकिन सुबह हुई तो उन्हें ज्ञान हुआ कि उनका शिकार उनके हाथ से निकल गया है। इस पर वे इधर उधर भागे, मक्का की गलियों में सहाबा के घरों पर तलाश किया परन्तु कुछ पता न चला। इस ग़ुस्सा में उन्होंने हज़रत अली को पकड़ा और कुछ पीटा। "

(सीरत ख़ातमन्नबिय्यीन लेखक हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब ,पृष्ठ 236-237)

हज़रत अली की इस क़ुर्बानी का वर्णन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि ने इस प्रकार फ़रमाया है। फ़रमाते हैं कि "रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने घर से निकलते समय हज़रत अली को अपने बिस्तर पर लिटा दिया था। (चारपाई का रिवाज उन दिनों नहीं था बल्कि अब तक भी मक्का में चारपाई का आम रिवाज नहीं। कुछ रिवायतों में ग़लती से इस प्रकार वर्णन हुआ है कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको अपनी चारपाई पर लिटा दिया।) बिस्तर बनाया जाता था बाक़ायदा चारपाई नहीं होती थी "जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम रात के समय उन लोगों के पास से गुज़रे तो उनमें से कुछ ने आप को देखा भी परन्तु उन्होंने विचार कर लिया कि यह कोई और व्यक्ति है जो शायद आप से मिलने के लिए आया होगा और अब वापस जा रहा है। इस का कारण यही थी कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बहुत ही बहादुरी के साथ बाहर निकले थे और

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अ: 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY,
JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

आपकी तबीयत पर ज़रा भी ख़ौफ़ नहीं था। उन्होंने समझा कि इतनी बहादुरी से आप उस समय बाहर निकलने का साहस कहाँ कर सकते हैं। यह ज़रूर कोई दूसरा आदमी है जो आपसे मिलने के लिए आया होगा। इस के बाद उन्होंने दरवाज़ा की दराड़'' दरवाज़े की दर्ज़'' में से अंदर झाँका यह इत्मीनान करने के लिए कि कहीं आप बाहर तो नहीं निकल गए तो उन्होंने एक आदमी को सोया हुआ देखा और विचार किया कि यही रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हैं। अत: सारी रात वे आप के घर का पहरा देते रहे फिर जब उचित समय समझा तो अंदर दाख़िल हुए और शायद उन्हें जिस्म से शक पड़ गया कि यह जिस्म आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नहीं। उन्होंने मुँह पर से कपड़ा उठा कर देखा या शायद मुँह नंगा था बहरहाल उन्हें मालूम हुआ कि सोने वाले व्यक्ति हज़रत अली हैं। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम नहीं। तब उन्हें मालूम हुआ कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सलामती के साथ जा चुके हैं और उन के लिए अब सिवाए असफलता के कुछ बाक़ी नही रहा।

(तफ़सीर कबीर, भाग 8 पृष्ठ 510)

एक और जगह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि वर्णन फ़रमाते हैं कि अल्लाह तआला ने हज़रत अली को यह महान क़ुर्बानी करने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाई कि जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हिजरत के लिए रात के समय अपने घर से निकलना चाहा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अली से फ़रमाया तुम मेरे बिस्तर पर लेट जाओ ताकि कुफ़्फ़ार यदि झांक कर देखें तो उन्हें यह दिखाई देता रहे कि कोई व्यक्ति बिस्तर पर सो रहा है और वे पीछा करने के लिए इधर उधर न निकलें। उस समय हज़रत अली ने यह नहीं कहा कि हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम घर के इर्द-गिर्द तो क़ुरैश के चुने हुए नौजवान हाथ में तलवार लिए खड़े हैं। यदि सुबह को उन्हें मालूम हुआ कि आप कहीं बाहर तशरीफ़ ले जा चुके हैं तो वे मुझ पर आक्रमण कर के मुझे कत्ल कर देंगे बल्कि वह बड़े इतमीनान के साथ अर्थात हज़रत अली बड़े इतमीनान के साथ रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बिस्तर पर लेट गए और आप ने अपनी चादर उन पर डाल दी। जब सुबह हुई और क़ुरैश ने देखा कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बजाय हज़रत अली आपके बिस्तर से उठे हैं तो वे अपनी नाकामी पर दाँत पीस कर रह गए और उन्होंने हज़रत अली को पकड़ कर मारा पीटा परन्तु इस से क्या बन सकता था। ख़ुदाई ख़बरें पूरी हो चुकी थीं और मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सलामती के साथ मक्का से बाहर जा चुके थे। उस समय हज़रत अली को क्या मालूम था कि मुझे इस ईमान के बदले में क्या मिलने वाला है। हाँ अल्लाह तआला जानता था कि इस क़ुर्बानी के बदले में केवल हज़रत अली ही सम्मान नहीं पाएँगे बल्कि हज़रत अली की औलाद भी सम्मान पाएगी इसलिए अल्लाह तआला ने हज़रत अली पर प्रथम फ़ज़्ल तो यह किया कि उनको रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की दामादी का सम्मान प्रदान किया। दूसरा फ़ज़्ल अल्लाह तआला ने उन पर यह किया कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के दिल में उन के लिए इतनी मुहब्बत पैदा की कि आप ने कई बार उनकी प्रशंसा फ़रमाई।

(उद्धरित तफ़सीर भाग 7 पृष्ठ 25)

बहरहाल यह एक ही घटना के विभिन्न माध्यमों से हवाले मैंने प्रस्तुत किए हैं जो असल घटना की दृष्टि से तो एक ही चीज़ होती है लेकिन विभिन्न रंगों में जब मैं वर्णन करता हूँ तो इसलिए कि इस की तफ़सील और व्याख्या जो है इस में इस सहाबी की कुछ नई बातें पता लग जाती हैं या नए अंदाज़ में पेश की जाती हैं जिससे कई पहलू सामने आ जाते हैं। और यहां हज़रत अली के मामले में हज़रत अली रज़ि के व्यक्तित्व के विभिन्न पहलू भी सामने आ गए। आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का हर सहाबी से जो संबंध था उस का भी पता लग जाता है तो इस तरह कई बार लगता यही है कि एक ही हवाला विभिन्न जगह पेश किया जा रहा है लेकिन हर हवाले का अंदाज़ विभिन्न होता है इसलिए पेश करता हूँ और यहां हज़रत अली के हवाले से भी यही बातें हमें पता चली हैं। बहरहाल हज़रत अली रज़ि का वर्णन चल रहा है। बाक़ी इंशा अल्लाह तआला बाद में प्रस्तुत करूँगा।

इस समय मैं कुछ मरहूमीन का वर्णन करूँगा जिनका जनाज़ा पढ़ाऊंगा। जिनमें से सबसे पहले मढ़ बलोचां ज़िला ननकाना के डाक्टर ताहिर महमूद साहिब शहीद इब्ने तारिक़ महमूद साहिब हैं। उनको मुख़ालिफ़ीन ने 20 नवम्बर 2020 ई को नमाज़ जुम्अ: की अदायगी के बाद पिछले जुम्अ फायरिंग कर के शहीद किया था। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन।

विस्तार के अनुसार शहीद मरहूम अपने पिता तारिक़ महमूद साहिब और अन्य फ़ैमिली मैंबरों के साथ 20 नवम्बर को नमाज़ जुमा की अदायगी के लिए अपने ताया आदरणीय मुहम्मद हफ़ीज़ साहिब के घर जमा हुए। नमाज़ जुमा की अदायगी के बाद लगभग अढ़ाई बजे अपने घर जाने के लिए बाहर निकले तो गली में मौजूद मह्द नामी एक सौला वर्ष के नौजवान जो पिस्तौल से मुसल्लह था उसने फायरिंग की और फायरिंग के नतीजा में डाक्टर ताहिर महमूद साहिब मौक़ा पर शहीद हो गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन। शहीद मरहूम की उम्र 31 वर्ष थी। इस आक्रमण में शहीद मरहूम के पिता तारिक़ महमूद साहिब उम्र 55 वर्ष जो सैक्रेटरी माल और भूतपूर्व सदर हैं कि सिर में गोली लगने से बहुत ज़ख़्मी हुए और अब भी हस्पताल में इलाज हो रहा है जबकि शहीद मरहूम के ताया आदरणीय सईद अहमद मक़सूद साहिब उम्र 60 वर्ष जो सदर जमाअत हैं और आदरणीय तय्यब महमूद साहिब ज़ईम ख़ुद्दामुल अहमदिया उम्र 26 वर्ष फायरिंग के नतीजा में ज़ख़्मी हुए और कुछ देर हस्पताल में इलाज हुआ। वे तो ख़ैर ठीक हो गए हैं लेकिन शहीद के पिता साहिब जो हैं वह अधिक ज़ख़्मी हैं। हमला करने वाला दो मैगज़ीन फ़ायर कर के तीसरे मैगज़ीन को लोड कर रहा था कि पकड़ा गया लेकिन बहरहाल दुश्मनी का एक नया रंग अब वहां इस दृष्टि से उन लोगों ने शुरू किया है कि छोटी उम्र के लड़कों को भड़काते हैं और उनसे हमले करवाते हैं ताकि बाद में अदालतों में कह सकें कि यह तो वयस्क नहीं है और इस को सज़ा में कमी हो जाए और या वैसे सज़ा माफ़ हो जाए तो विभिन्न तरीक़े अब उन्होंने आज़माऐ हैं। ऊपर से ये कहते हैं कि हमें कोई शिकवा नहीं और हम बिल्कुल कोई सख़्ती नहीं कर रहे। अहमदियों पर कोई नाजायज़ ज़ुल्म नहीं कर रहे और दूसरी ओर शहादतें भी हो रही हैं और हुकूमत के कुछ आफ़िसर ज़बरदस्ती मुक़द्दमे भी कर रहे हैं। बहरहाल अल्लाह तआला करे कि इन लोगों को अक़्ल आए और यदि नहीं है तो अल्लाह तआला स्वयं उनकी पकड़ करे।

मरहूम के वंश में अहमदियत का नफ़ुज़ उनके दादा आदरणीय हकीम मुहम्मद इब्राहीम साहिब के माध्यम से हुआ था जिन्होंने अपने वंश के अन्य लोगों के साथ तेरह वर्ष की उम्र में ख़िलाफ़त सानिया के दौर में बैअत की थी। मरहूम शहीद जो थे इस्लामीया कॉलेज लाहौर से उन्होंने एफ़ एस सी किया। इसके बाद 2013 ई में मास्को रूस से एम.बी बी एस की डिग्री प्राप्त की और आजकल पी एम सी की परीक्षा की तैयारी कर रहे थे। फ़ज़्ले उम्र हस्पताल में भी काम करते रहे हैं। शहीद मरहूम बेशुमार विशेषताओं वाले थे। ख़िलाफ़त से बहुत अधिक मुहब्बत थी। जमाअत के ओहदेदारान और मर्कज़ी मेहमानों का बहुत सम्मान करते थे। जब भी उनको जमाअत की ओर से किसी काम के लिए कहा जाता तो शीघ्र हाज़िर हो जाते। बहैसीयत क़ायद ख़ुद्दामुल अहमदिया सेवा की तौफ़ीक़ पाई। कई बार मरीज़ों को स्वयं अपनी गाड़ी में हस्पतालों में पहुंचाया। हमेशा सेवा में आगे-आगे रहते थे और ग़ैर अज़ जमाअत के साथ भी उनका यही संबंध था। कई शरीफ़ ग़ैर अज़ जमाअत लोग तशरीफ़ लाकर इस घटना पर अफ़सोस का इज़हार करते रहे। इस वंश को लम्बे समय से कट्टर विरोध के हालात का सामना था। 1974 ई में भी मुख़ालफ़ीन ने शहीद मरहूम के दादा-जान की दुकान जला दी थी। उनके पिता तारिक़ महमूद साहिब को 2006 ई में मुख़ालिफ़ीन ने ज़ालिमाना तरीक़ से अत्याचार का निशाना बनाया था। कुछ दिन पहले एक अहमदियत के विरोधी ने शहीद मरहूम के पिता साहिब पर बाज़ार से गुज़रते हुए थूक फेंक दिया था, थूका। इस किस्म की हरकतें तो ये लोग उनके साथ स्थायी रूप से कर रहे थे लेकिन बहरहाल यह वहां डटे हुए थे।

सदाक़त अहमद साहिब मुबल्लिग़ सेंट पीटर्सबर्ग रशिया लिखते हैं कि शैक्षिक ज़िन्दगी का एक बड़ा हिस्सा उन्होंने काज़ान तातारिस्तान (रशिया) मैं गुज़ारा और कामयाब डाक्टर बन कर पाकिस्तान गए। कहते हैं कि डाक्टर ताहिर महमूद साहिब ने शिक्षा के दौरान जमाअत के साथ निहायत श्रद्धा का संबंध क़ायम रखा। नमाज़

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण के उदाहरण प्रस्तुत करो यहां तक कि सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

जुमा और चंदों की अदायगी में भी हमेशा बाक़ायदा रहे और अन्य जमाअत के प्रोग्राम में बावजूद इसके कि उनका होस्टल मिशन हाऊस से काफ़ी दूरी पर था बाक़ायदा शामिल होते और शौक़ से हिस्सा लेते और कहते हैं उनकी गिनती अपने ग्रुप के मैडीकल के छात्रों में ज़हीन छात्रों में होती थी। पढ़ाई की भाषा यद्यपि अंग्रेज़ी थी लेकिन अपनी मेहनत और शौक़ से रशियन भाषा में भी काफ़ी रवां हो गए थे। काज़ान में जिस होस्टल में रहते थे वहां सबको बताया हुआ था कि वह अहमदी हैं और इस कारण से विरोध का भी सामना करना पड़ता था क्योंकि वहां पाकिस्तानी छात्र भी थे जो जमाअत का बहुत विरोध करते थे लेकिन उनको जब भी मौक़ा मिलता तब्लीग़ करते थे। यह कहते हैं अब मैं पाकिस्तान आया हुआ था, यहां भी मुझे मिले और उन्होंने बताया कि मढ़ बलोचां में उनका विरोध बहुत अधिक है। इसलिए रब्वह स्थानांतरित होना चाहते थे। उन्होंने यहां रब्वाह में घर भी बनाया हुआ है।

फ़रीद एबरागेमोफ़ काज़ान तातारिस्तान के रशियन अहमदी हैं। कहते हैं कि आपने रशियन भाषा बहुत शीघ्र सीख ली। बहुत ख़ुश मिज़ाज और नेक तबीयत के मालिक थे। उनकी मुस्कुराहट से नूर छलकता था।

मरहूम के पीछे रहने वालो में पिता आदरणीय तारिक़ महमूद साहिब के अतिरिक्त माता आदरणीया शमीम अख़तर साहिबा और भाई क़ासिम महमूद साहिब जर्मनी में हैं और बहन फ़ाइज़ा महमूद साहिबा पत्नी नसीर अहमद साहिब जर्मनी में हैं। ये लोग उनके पीछे रहने वालों में हैं। अल्लाह तआला शहीद मरहूम के दर्जात बुलंद फ़रमाए। जन्नतुल फ़िरदौस में उच्च स्थान प्रदान फ़रमाए। ज़ख़्मियों को सेहत प्रदान फ़रमाए और सम्पूर्ण तथा शीघ्र ठीक करे और उन सब ज़ख़्मियों को हर किस्म की परेशानियों से बचाए। उनके बाक़ी सब अज़ीज़ों और रिश्तेदारों को अपने फ़ज़लों और रहमतों से नवाज़ता रहे।

अगला जनाज़ा आदरणीय जमालुद्दीन महमूद साहिब का है जो सैरालियून में नेशनल जनरल थे। 3 नवम्बर को अचानक दिल का दौरा पड़ने के कारण से वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेहि राजेऊन।

मरहूम पिछले सौला वर्ष से बतौर जनरल सैक्रेटरी ख़िदमत कर रहे थे। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसी थे। सईदुर्रहमान साहिब मिशनरी इंचार्ज लिखते हैं कि उनकी बाक़ी कई ख़ूबियों के अतिरिक्त एक बड़ी ख़ूबी यह भी थी कि सारी दुनिया के अहमदियों को क़ौम परस्ती से बचा कर एक ख़ानदान बनाने वाले थे। बहुत हिक्मत और श्रद्धा से काम करते थे। लगभग दो हज़ार लोगों ने आपकी नमाज़ जनाज़ा और तजहीज़ तकफ़ीन में शिरकत की। इस अवसर पर दो वुज़ारते हुकूमत, चीफ़ आफ़ आर्मी स्टाफ़ सैरालियून, कई मेम्बराने पार्लीमैंट, पैरामाउंट चीफ़स के साथ बीसियों उच्च हुकूमत के अफ़सर मौजूद थे।

मुबारक ताहिर साहिब सेक्रेटरी नुसरत जहां लिखते हैं कि मरहूम बहुत मुख़लिस फ़िदाई और दिल से जमाअत की सेवा करने वाले थे। एक समय से बतौर जनरल सेक्रेटरी सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे थे। इसी तरह अहमदिया प्रिंटिंग प्रैस सेरालियून के नायब मैनेजर भी थे। मरहूम का संबंध घाना से था। उनके पिता आदरणीय इब्राहीम को जो महमूद साहिब को हज़रत मौलाना नज़ीर अहमद मुबश्शिर साहिब ने शिक्षा के मैदान में सेवा के लिए सेरालियून भिजवाया था। मुबारक ताहिर साहिब यह लिखते हैं कि तेरा वर्ष तक जमाल साहिब मेरे पास रोकोपूर में रहे। उनके पिता ने उनकी शिक्षा के लिए उनके पास छोड़ा हुआ था। महोदय आरम्भ से ही नेक थे। नमाज़ बाजमाअत और अन्य जमाअत की सेवाओं में आगे रहते थे। रोकोपूर के ख़ुद्दाम के साथ मिलकर तब्लीग़ और धर्म की इशाअत का काम करते रहे।

उसमान तालिआ साहिब इंचार्ज रकीम प्रैस सैरालियून कहते हैं कि जमालुद्दीन महमूद साहिब विनीत से पहले वहां इंचार्ज थे, लंबे समय से सेवा कर रहे थे। विनीत ने उनके साथ बारह वर्ष का समय गुज़ारा है। इस दौरान कभी भी उन्होंने यह इज़हार नहीं किया कि ख़ाकसार उनसे छोटा है और तजुर्बा नहीं रखता है बल्कि हमेशा सम्मान से पेश आते और कहते कि आप मुबल्लिग़ हैं और आपका तक़र्रुर ख़लीफ़तुल मसीह ने किया है। और कभी भी किसी मामले में ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने विनीत की इताअत न की हो। इताअत और विनम्रता इतनी कूट कूट कर भरी हुई थी कि कभी उनको कोई काम कह दिया जाता तो तुरन्त उस को शुरू कर देते और हर संभावित तरीक़ा पर प्रयास कर के उसे मुकम्मल करते। कहते हैं कि विनीत ने इस बीच मैं उनसे बहुत कुछ सीखा है। प्रतिदिन निरंतरता से नमाज़ तहज्जुद पढ़ा करते थे। नमाज़ बा-जमाअत की बहुत पाबन्दी करते थे। नमाज़ भी ऐसी होती कि इस की ख़ूबसूरती रश्क योग्य थी। हमेशा अत्याधिक विनम्रता तथा विनय और तसल्ली से नमाज़ अदा करते थे। ख़िलाफ़त से बहुत इश्क़ था और हर ख़ुत्बा जुमा निहायत अदब के साथ बैठ कर सुनते थे।

फिर यह लिखते हैं कि सेरालियून के कल्चर के अनुसार जमाल साहिब ने कई बच्चों को अपने घर में रखा। अपने ख़र्च पर तालीम दिलवाई और उनमें से कई उस समय अच्छी नौकरी कर रहे हैं और बहुत अदब और प्यार से उनको याद करते हैं।

नवीद क़मर साहिब मुरब्बी लिखते हैं कि जमाअत की तहरीकों में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते। अपने माता पिता और ख़ानदान के अन्य बुज़ुर्गों के नाम से तहरीक जदीद और वक़्फ़ जदीद के विभागों में इज़ाफ़ी क़ुर्बानी करते। जब कभी अपने मूल गांव रोको पूर आते तो बावजूद व्यस्तता के वक्त पर मस्जिद पहुंचते। सामान्यत: मग़रिब और इशा के वक्त में लोगों को जमाअत की शिक्षाओं का बताते और विशेषता ख़िलाफ़त अहमदिया के महत्तव और बरकत और इस से जुड़े रहने का विषय बड़े उत्तम अंदाज़ में समझाते थे। फिर लिखते हैं कि समस्त लोगों से उनका प्यार तथा मुहब्बत का सम्बन्ध था। उनकी वफ़ात की ख़बर पर क्या अहमदी और क्या ग़ैर अहमदी हर आँख आंसू बहा रही थी। यही कारण थी कि उनके जनाज़े में लोगों की एक बड़ी संख्या शामिल हुई और आस पास के अतिरिक्त लम्बी यात्रा कर के भी लोग शामिल हुए।

मरहूम की दो पत्नियां थीं। पहली पत्नी से अलग हो गए लेकिन औलाद उन्हीं से थी जिससे दो पुत्रियाँ और दो पुत्र थे और एक पुत्री की तो शादी हो गई है। आस्ट्रेलिया में हैं। बाक़ी दो बच्चे घाना में और एक सैरालियून में पढ़ रहे हैं। दूसरी पत्नी से उनकी कोई औलाद नहीं है। बहरहाल अल्लाह तआला मरहूम से मग़फ़िरत और रहम का व्यवहार फ़रमाए। दर्जात बुलंद करे और उनके बच्चों को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ प्रदान फ़रमाए।

अगला जनाज़ा अमतुस्लाम साहिबा पत्नी आदरणीय चौधरी सलाहुद्दीन साहिब मरहूम भूतपूर्व नाज़िम जायदाद और मुशीर क़ानूनी रब्वह का है जो 19 अक्तूबर को वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलैहि राजेऊन।

उनके पति चौधरी सलाहुद्दीन साहिब जो थे वो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी हज़रत चौधरी अब्दुल्लाह ख़ान साहिब और हज़रत हुम्ना बी बी साहिबा रज़ि के पोते थे। उनके दादा और दादी दोनों सहाबी थे। सहाबा में से थे। उनके पुत्र नईमुद्दीन साहिब अपनी माता के बारे में लिखते हैं कि जिन बातों ने मेरी ज़िन्दगी पर अनमिट नुक़ूश छोड़े उनमें से एक माता साहिबा का हमारी नमाज़ों का ध्यान रखना था। यह उनका सबसे मज़बूत अनुकरण था। और बड़ी सख़्ती से पाबंदी करवाती थीं। यह काम बड़ा मज़बूत था। हमारा घर वास्तव में होस्टल का रंग रखता था। बहुत अधिक हमारे अज़ीज़ शिक्षा की उद्देश्य से हमारे घर शिक्षा के लिए रहा करते थे और उनका निवास कई कई वर्ष तक फैला रहा। माता मरहूमा हर व्यक्ति से सम्बन्ध में इस बात का विशेष ध्यान रखतीं कि समस्त प्रिय नमाज़ की हर सूरत में पाबंदी करें। समस्त बच्चों को स्वयं क़ुरआन पढ़ातीं। बड़े बच्चों के लिए उस्ताद का निर्धारण भी करती रहीं। दूसरा गुण जिसने मेरी ज़ात पर गहरा प्रभाव छोड़ा वह आपका घर में रहते लोगों के लिए हर संभव आराम और सुख का सामान पहुंचाने के लिए कोशिश करना था। यदि किसी दिन मुलाज़िमा छुट्टी कर लेती तो आप सब बच्चों के, अपने बच्चों के भी दूसरों के भी, कपड़े धोने में कभी कोई लज्जा महसूस न करतीं। हमारे नन्हियाल और ददियाल के लोगों का प्रचुरता से रब्वाह आना जाना करते रहते। पिता जी मरहूम प्राय जमाअत की ज़िम्मेदारियों के कारण रब्वाह में मौजूद न होते। माता साहिबा सब मेहमानों के लिए खाना तैय्यार करतीं। कोई कमी न छोड़तीं और मैं बड़ा पुत्र था इसलिए मेरी निगरानी करतीं कि मेहमानों की सही तरह मेहमानदारी करूँ और कोई सुस्ती न हो। फिर कहते हैं कि हमारी पड़दादी, दादी और नानी अक्सर लम्बा समय हमारे यहाँ रहती थीं और हम ख़ुदा के फ़ज़ल से छ: बहन भाई थे और बड़ी संख्या में ख़ानदान के बच्चे भी हमारे यहाँ शिक्षा के

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

उद्देश्य से रहा करते थे परन्तु इन समस्त हालात के बावजूद आप इन तीनों बुज़ुर्गों की सेवा सालों तक निहायत उत्तम रूप से करती रहीं। जलसा सालाना के अवसर पर बिना किसी अतिशयोक्ति के 80-90 मेहमान हो जाते थे। उनके निवास तथा खाने के लिए घर पर टेंट लगा करते थे। बिस्तरों के लिए गांव से प्रबन्ध हुआ करता था। सब प्रबन्ध पिता जी और माता साहिबा दोनों मिलकर बहुत मुहब्बत और ख़ुश-दिली से खुले दिल से किया करते थे और हर अज़ीज़ ने बिना किसी भेद के आपकी मुहब्बत और मेहमान नवाज़ी का इज़हार किया है।

उनके एक भांजे ने लिखा कि मैं उनके घर में तालीम प्राप्त करता रहा और यह कभी नहीं हुआ कि सुबह की रोटी हमें शाम को दी हो या शाम की सुबह खिलाई हो बल्कि नाश्ता के समय ताज़ा पराठे और ताज़ा दही हमेशा दिया करती थीं। ग़ैरों के बच्चों का, अर्थात अपने रिश्तेदार बच्चे जो शिक्षा प्राप्त कर रहे थे उनका भी उतना ध्यान रखती थीं हालाँकि अपनी औलाद भी काफ़ी थी। ख़ुलफ़ाऐ सिल्सिला से मुहब्बत और इताअत का मिसाल योग्य संबंध था और फिर कहते हैं इन मुहतरम तथा सम्मान्नीय हस्तियों ने हमारी रग-रग में भी ऐसी ही भावनाएं, मुहब्बत एहसासात दाख़िल किए।

उनकी बहू नबीला नईम साहिबा हैं कहती हैं मरहूमा बड़ी ख़ूबियों की मालिक थीं। नमाज़ों की पाबन्द थीं। क़ुरआन करीम की तिलावत करने वाली। नमाज़ तहज्जुद अदा करने वाली। बड़ा धैर्य करने वाली हस्ती थीं। मुश्किल समय में भी कभी कोई शिकवा नहीं करती थीं। ख़ुदा तआला की रज़ा पर हमेशा ख़ुश रहने वाली थीं। गरीबों का ख्याल रखने वाले थीं। किसी को दुःख कष्ट में न देख सकती थीं। हमेशा उनकी मदद के लिए तैयार रहती थीं। मरहूमा ख़िलाफ़त की इताअत में और वफ़ा में सब से आगे रहती थीं। अल्लाह तआला उनकी औलाद को और उनकी नस्ल को भी इन ख़ूबियों वाला बनाए। मरहूमा से क्षमा और रहम का व्यवहार फ़रमाए। दर्जात बुलन्द फ़रमाए।

अगला जनाज़ा है आदरणीया मन्सूरा बुशरा साहिबा माता डाक्टर लतीफ़ क़ुरैशी साहिबा का 6 नवम्बर को 97 वर्ष की आयु में वफ़ात पा गई थीं। इन्ना लिल्लाहे वा इन्ना इलैहि राजेऊन।

आप हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी बल्कि सहाबा की औलाद थीं। हज़रत मुंशी फ़य्याज़ अली कपूरथलवी साहिब की नवासी थीं और हज़रत शैख़ अब्दुर्रशीद साहिब की पोती थीं। दोनों सहाबी थे। बचपन में हज़रत अम्माँ जान रज़ियल्लाहु तआला अन्हा के साथ क़रीबी संबंध था। मरहूमा याददाश्त की कमी के बावजूद अंतिम समय तक नमाज़ पढ़ना कभी नहीं भूलीं। ख़ुत्बा जुमा भी एम टी ए पर बाक़ायदगी से सुनती थीं। एक नेक वफ़ा वाली बुज़ुर्ग महिला थीं। मरहूमा अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मूसिया थीं। डाक्टर लतीफ़ क़ुरैशी साहिब की जैसा कि मैंने कहा उनकी माता थीं। और पिछले दिनों क़ुरैशी साहिब का भी और उनकी पत्नी शौकत गौहर साहिबा का भी देहांत हुआ ,इन दोनों ने भी जब तक ये ज़िन्दा रहे डाक्टर साहिब भी और उनकी पत्नी भी ,उनकी बड़ी सेवा की है। बहरहाल उनकी ज़िन्दगी में ही वे दोनों फ़ौत हो गए।

उनकी पोती इस्मत मिर्ज़ा लिखती हैं मेरी दादी हक़ीक़ी मोमिना, अहमदियत और ख़िलाफ़त की बहुत अधिक मुहब्बत करने वाली महिला थीं। मैंने उनसे अधिक इबादत करने वाला और क़ुरआन से अक़ीदत और मुहब्बत रखने वाला नहीं देखा। ख़ामोश तबीयत वाली और सादा स्वभाव की मालिक थीं। अल्लाह तआला मरहूमा से क्षमा और रहम का व्यवहार फ़रमाए। दर्जात बुलन्द फ़रमाए।

जुम्अः के बाद इन सबकी नमाज़ जनाज़ा अदा करूँगा। इंशा अल्लाह।

(अल्फ़ज़ल इंटरनेशनल 7 अगस्त 2020 पृष्ठ 5 से 10)

☆ ☆ ☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उसके रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अः 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

पृष्ठ 2 का शेष

और जहां इबादत करने का हक़ अदा करने वाले हों हक़ीक़ी इबादत करने वालों का हक़ अदा करने वाले हों वहां लोगों के हुक़ूक़ भी अदा करने वाले हों।

इसी तरह में समस्त सम्माननीय मेहमानों का भी शुक्रिया अदा करता हूँ कि वे यहां पधारे और हमारे इस फंक्शन को रौनक बख़शी। शुक्रिया

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का यह भाषण आठ बजकर पच्चीस मिनट तक जारी रहा। अंत में हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। इस के बाद इस आयोजन में शामिल होने वाले समस्त अतिथियों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ में खाना खाया।

आज के इस आयोजन में दो सौ दस मेहमान शामिल हुए जिनमें ज़िला पार्लियामेंट के मेंबर SCHULTHEIS KARL लार्ड मेयर आकिन MARCEL PHILIPP मेंबर ज़िला पार्लियामेंट JANSEN DANIELA मेंबर सिटी पार्लियामेंट KUCKELKORN MANFREI मेंबर सिटी पार्लियामेंट JANSEN BJORN मेंबर सिटी पार्लियामेंट DOPATKA MATHIAS शहर WURSELEN के मेयर KELLER ARNO और इसके अतिरिक्त विभिन्न हुकूमती दफ्तर के हुक्काम, वुकला, डाक्टरज़, इंजीनियर, अध्यापक और जीवन के विभिन्न विभागों' से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल थे।

आयोजन के अन्त पर कुछ मेहमानों ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त हुआ। हुज़ूर अनवर ने मेहमानों से बातचीत फ़रमाई। जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मार्की से बाहर पधार रहे थे तो एक वृद्ध अहमदी मित्र ने (जो व्हील-चेयर पर थे) हुज़ूर अनवर से मिलने की इच्छा प्रकट की। हुज़ूर अनवर प्रेम पूर्वक उनके पास खड़े हो गए और हाथ मिलाने के सौभाग्य से नवाज़ा और उनका हाल दरयाफ़्त फ़रमाया। इस ख़ुशनसीब व्यक्ति का नाम चौधरी इनायतुल्लाह है और उनकी आयु 100 वर्ष है। पाकिस्तान में भलवाल ज़िला सरगोधा से सम्बन्ध है।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए लजना की मारकी में तशरीफ़ ले गए जहां महिलाओं ने दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया और बच्चियों ने दुआइया नज़्में और तराने प्रस्तुत किए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक बच्चियों को चॉकलेट प्रदान की।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले आए। जहां प्रोग्राम के अनुसार लोकल मज्लिस आमला और अन्य जमाअती अधिकारियों ने तस्वीर खिचवाने का सौभाग्य पाया। इस यात्रा में बच्चे मस्जिद के बाहरी सेहन में एक लाइन में खड़े हो चुके थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने प्रेम पूर्वक इन सब बच्चों को भी चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए मस्जिद के बाहरी सेहन में जमाअत के लोग में उपस्थित रहे। इस यात्रा में कुछ मेहमान आकर हुज़ूर अनवर से मिले और हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया।

आज के इस आयोजन में शामिल होने वाले बहुत से मेहमानों ने अपने विचारों का प्रकटन किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला के भाषण ने मेहमानों पर गहरा प्रभाव छोड़ा और मेहमान उसका प्रकटन किए बिना नहीं रह सके।

मस्जिद के सामने स्थित किंडर गार्डन स्कूल की एक टीचर ANETT BOLLE भी इस आयोजन में शामिल होने के लिए आई थीं। हुज़ूर अनवर के भाषण से प्रभावित हो कर कहने लगीं कि आज मुझे सबसे ज़्यादा प्रभावित हुज़ूर अनवर के व्यक्तित्व ने किया है। हुज़ूर की आँखों से मुहब्बत टपकती है और हुज़ूर के शब्दों से दिल को संतुष्टि प्राप्त होती है। ख़लीफतुल मसीह ने आज बड़ी ख़ुशअख़लाक़ी से और धीमे ढंग में बातें की हैं लेकिन इस ढंग में भी एक बारोब बादशाह की झलक थी। ख़लीफ़ा की ये सब बातें हमारे दिल में उत्तरी हैं और इस कारण से प्रत्येक के दिल में उनकी एक इज़्ज़त क़ायम हो गई है। मुझे यह कहना पड़ेगा कि ख़लीफतुल मसीह इन्सानियत के लिए एक विशेष भेंट हैं । मेरी जीवन में कभी किसी इन्सान ने मुझे इतना प्रभावित नहीं किया जितना आज ख़लीफतुल मसीह ने किया है।

वह टीचर के पति FRITZ BOLLE भी इस आयोजन में शामिल थे। वह कहने लगे कि जो अमन ख़लीफतुल मसीह के मुबारक व्यक्तित्व से संसार में फैल रहा है यह एक आश्चर्यचकित बात है। मैं सोचता हूँ कि यही वह अमन है जिसकी

आज संसार को आवश्यकता है।

एक महिला सायकालू जस्ट अलीगज़ंडरा साहिबा ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा

मैं ख़लीफतुल मसीह के भाषण से बहुत प्रभावित हुई हूँ। विशेषता हुज़ूर अनवर के मुहब्बत भरे संदेश से जो आपने आज हमें दिया है। हुज़ूर अनवर ने फूल बेचने वाले की उदाहरण देकर इस्लामी शिक्षा को और उच्च आचरण को फूल से जो समानता दी है उसने मुझे बहुत प्रभावित किया है और अब यह हमेशा क़ायम रहने वाला और ख़ुशबू देने वाला फूल, हमेशा हमारे साथ रहेगा।

AACHEN में रहने वाले एक दोस्त BONGER साहिब भी इस आयोजन में शामिल हुए। कहने लगे कि दो तीन वर्ष पूर्व मैंने यूरोपीयन पार्लियामेंट में भी ख़लीफतुल मसीह का भाषण सुना था। आज मैं वास्तव में इस उद्देश्य से आया था ताकि यह देखूं और तुलना करूँ कि क्या आपके ख़लीफ़ा केवल बड़ी शख़्सियात के सामने और अहम प्लेटफार्म पुर शांति की शिक्षा प्रस्तुत करते हैं या दूसरे छोटे प्रोग्रामों में भी जहां कम पावर रखने वाले लोग शामिल हों वहां भी अमन की बात प्रस्तुत करते हैं। इस लिए आज मैंने ख़लीफ़ा का भाषण सुना है आपने वही शिक्षा प्रस्तुत की है जो यूरोपियन पार्लियामेंट में की थी। आपने सबको एक दूसरे के साथ मुहब्बत करने, रवादारी इख़तियार करने, सब्र का बरताव करने और हौसला दिखाने और आपस में नेकी से व्यवहार करने की नसीहत की है। इन सब बातों ने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

ज़िला पार्लियामेंट के मेंबर KARL SCHULTHEIS ने कहा

"आज के आयोजन का प्रबन्ध बहुत अच्छा था। आपके ख़लीफ़ा एक वास्तविक आचरण हैं और वास्तविक रूप में अमन के पैगम्बर हैं।"

ज़िला पार्लियामेंट की मेंबर DANIELA JANSEN साहिबा ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा

"ख़लीफतुल मसीह का संदेश और लोगों तक पहुंचाया जाना चाहीए। आज ख़लीफतुल मसीह के भाषण से हमें इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा का परिचय हुआ है।"

मस्जिद के सेहन के साथ वाले हालों के मालिक MR.SCHNEIDER अपनी फ़ैमिली के साथ आए हुए थे।

हुज़ूर का भाषण सुनकर कहने लगे कि ख़लीफतुल मसीह ने जो फ़रमाया है वह बहुत प्रभावित करने वाला है। हमने बहुत ध्यान से ख़लीफ़ा का भाषण सुना और आपका यह भाषण बहुत महत्त्व का कारण है। हम तो ख़लीफतुल मसीह के शब्दों को और अधिक कई घंटों के लिए सुन सकते हैं बल्कि सुनना चाहते हैं।

एक जर्मन ने कहा कि ख़लीफतुल मसीह ने जो बातें वर्णन फ़रमाई हैं इस पर यदि केवल अहमदी मुस्लमान ही नहीं बल्कि पूरे संसार के लोग अमल करना शुरू कर दें तो इस संसार में एक ज़बरदस्त अमन का प्रदर्शन होगा। इस शिक्षा को क़बूल करने के लिए ईसाई या मुस्लमान होने की आवश्यकता नहीं बल्कि हर अक़्ल रखने वाला व्यक्ति इस शिक्षा को स्वीकार करने पर मजबूर है।

यूक्राइन देश से सम्बन्ध रखने वाली एक फ़ैमिली ने अपने विचारों का प्रकटन इन शब्दों में किया

"हम तो समझ रहे थे कि एक धार्मिक मार्गदर्शक होने की हैसियत से ख़लीफ़तुल मसीह एक मुश्किल ईश्वर वाणी प्रयोग करेंगे और दार्शनिक कलाम फ़रमाएँगे। परन्तु हम हैरान हैं कि ख़लीफतुल मसीह ने किसी भी किस्म के मुश्किल शब्दों का प्रयोग नहीं किया बल्कि आसान भाषा में अमली बातों की ओर ध्यान दिलाया और अपने भाषण का सम्बन्ध संसार के मामलों, उदाहरणों और दार्शनिक बातों से न रखा।"

यूनीवर्सिटी के एक प्रोफ़ैसर ANTHONY RIGHTS साहिब ने कहा

ख़लीफ़तुल मसीह की शख़्सियत एक ऐसी मालूम होती है जो समझते हैं कि किस ढ़ंग और किस तरीक़ पर बात करनी चाहीए जो अवसर और स्थान के अनुसार हो और यह बात मुझे निहायत अच्छी लगी है। तैयार करके तो हर कोई तक़रीर प्रस्तुत कर लेता है लेकिन एक इन्सान जो इतना वसीअ ज्ञान रखता हो और बिल्कुल अवसर स्थान के अनुसार बात करे और उपस्थित गणों की समझ के अनुसार बात करे, बहुत कम होते हैं। इसी तरह के भाषण और तक़रीरें होनी चाहिऐं। जैसी ख़लीफतुल मसीह ने की है। अब यह बात निहायत ज़रूरी मालूम होती है कि आपकी मस्जिद न केवल उस जगह बने बल्कि मज़ीद और जगहों पर भी बने।

SPD पार्टी के मेंबर MATHIAS DOPATKA साहिब ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा ''मुझे वह रूपक जो ख़लीफतुल मसीह ने अपने भाषण में प्रयोग किया था जो कि फूलों की दुकान और फूलों से था, बहुत पसंद आया कि जिस तरह इन्सान फूल की ख़ुशबू सूंघ कर ख़ुशी महसूस करता है इसी तरह जमाअत अहमदिया अमन की शिक्षा फैला कर एक न ख़त्म होने वाली ख़ुशबू और ख़ुशी फैलाना चाहती है। मुझे लगता है यह रूपक प्रयोग करने से पूर्व तक़रीर में सोचा तो नहीं होगा। लेकिन जिस तरह से ख़लीफतुल मसीह ने बात प्रस्तुत की बहुत ही अच्छी लगी।"

मस्जिद के क्षेत्र के पुलिस इंचार्ज WALTER FRANZEN साहिब ने कहा

"मुझे ख़लीफ़ा साहिब की यह बात बहुत ही अच्छी लगी कि वह केवल हम मेहमानों से संबोधित नहीं हुए बल्कि सब उपस्थित गणों अर्थात अहमदी लोगों तथा महिलाओं से भी संबोधित हुए। ख़लीफतुल मसीह ने जो नसीहत की कि सब का कर्तव्य बनता है कि अमन पैदा करें और आपस में प्यार और मुहब्बत से रहें और प्यार और मुहब्बत का व्यवहार करें ताकि अमन क़ायम हो। ख़लीफ़ा ने बताया कि ख़ुदा तआला सबसे मुहब्बत करता है और हर व्यक्ति उस की मुहब्बत को पा सकता है चाहे उसे GOD कहें या अल्लाह कहें या रब कहें और इस कारण से हमें मुहब्बत से प्रस्तुत आना चाहीए। ख़लीफ़ा ने यह बहुत अच्छी बात कही कि इन्सान को मुनाफ़क़त से बचना चाहीए। अर्थात यह कि इन्सान बे-शक मस्जिद जाए और शरीफ़ बनता फिरे लेकिन यदि दिल में ईमान न हो तो उसका कोई लाभ भी नहीं। ख़लीफ़ा की ये सब बातें बहुत पर प्रभावी हैं। मैं इस बात पर गर्व महसूस करता हूँ कि मुझे आज ख़लीफतुल मसीह को देखने का अवसर मिला। मेरे विचार में ख़लीफ़ा वह स्थान रखते हैं जो कैथोलिकस में पोप का स्थान है।"

WURSELEN शहर के मेयर ARNO KELLER ने कहा ''ख़लीफतुल मसीह के भाषण ने हमें बहुत प्रभावित किया है। मुझे एक बात निहायत पसंद आई कि इन्सान जो अल्लाह तआला की इबादत बजा लाता है वह केवल तब असल लाभ और असल उद्देश्य को पहुंच सकता है जब समस्त इन्सानों की सहायता करे और इन्सानों के हुक़ूक़ को समक्ष रखा जाए। मेरे नज़दीक यह वह (MAIN) संदेश है जो ख़लीफतुल मसीह ने आज हमें दिया है मैं आपको सच कहता हूँ कि यदि यह भावना और ऐसे उच्च आचरण को हर इन्सान समझे तो आज संसार तबदील हो जाए।"

शहर आकिन की INTEGRATION के मामलों के प्रतिनिधि ने कहा ''मैं ख़लीफ़तुल मसीह के संदेश का पूर्ण समर्थन करती हूँ। विशेषता इस बात की कि हमें सब्र से काम लेना चाहीए INTEGRATION के लिए सब्र की आवश्यकता है। फिर जो फूलों का रूपक ख़लीफ़ा ने वर्णन किया अत्यधिक ही पसंद आया और यह बात बहुत से अहमदियों पर पूरी उतरती है। तारिक़ जिन की फूलों की दुकान है अकेला नहीं है बल्कि AACHEN में बहुत से नौजवान मिलते हैं। जैसे उदाहरण के तौर पर वह जो एक जनवरी को सफ़ाई करते हैं और फिर पौधे लगाने का प्लान करते हैं।'

एक आर्कीटेक्ट ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा कि मुझे इस से पूर्व जमाअत से कोई परिचय नहीं था। हुज़ूर अनवर के भाषण ने दिल पर प्रभाव किया है और हुज़ूर अनवर का वार्ता का ढंग धीमा और बहुत प्रशंसनीय था। मुझे यह बात बहुत पसंद आई है कि मस्जिदों में इबादतों का कोई लाभ नहीं यदि दिलों में एक दूसरे के लिए द्वेष हों तो, और आपका यह फ़रमाना भी बहुत पसंद आया कि प्रत्येक किस्म के पड़ोसियों के हुक़ूक़ का ध्यान रखना और उन हुक़ूक़ की अदायगी इबादत के लिए अनिवार्य है।

एक पुलिस इंस्पेक्टर ने कहा "एक बहुत अच्छा प्रोग्राम था। जिसको मैं हमेशा अच्छे रंग में याद करूँगा। आपके ख़लीफ़ा एक आश्चर्यचकित प्रभाव क़ायम करने वाले व्यक्ति हैं।"

एक मेहमान MR. ALEX DROSTE ने कहा "प्यारी जमाअत अहमदिया" आप एक बहुत प्यारी जमाअत हैं। मुझे आपके प्रोग्राम में शामिल हो कर बहुत ख़ुशी हुई। मुझे बहुत जिज्ञासा थी कि आप कौन हैं? आप लोगों की मेहमान नवाज़ी बहुत उत्कृष्ट थी। अंत में मुझे अवसर मिला कि मैं ख़लीफतुल मसीह से हाथ मिला सकूं। यह मेरे लिए गर्व था। उस समय मेरी टांगें काँप रही थीं। मुझे आशा है कि हम अच्छे पड़ोसी बनेंगे। ख़ुदा और उसका फ़ज़ल आपके साथ हो।"

दो पुलिस वालों ने अपने विचारों का प्रकटन इस प्रकार किया कि हुज़ूर का भाषण बहुत अच्छा था। सारी बातें सीधा दिल में उतर रही थीं। यदि इस पर अनुकरण किया जाए तो संसार में अमन क़ायम हो जाएगी। लेकिन इस के लिए प्रत्येक को

हरकत करनी होगी। प्रत्येक को इस पर अनुकरण करना होगा।

एक REAL ESTATE AGENT ने अपने विचारों का प्रकटन करते हुए कहा कि ख़लीफतुल मसीह ने बिल्कुल मेरे दिल की बातें फ़रमाई हैं, मैंने ख़लीफ़ा की तक़रीर जो यूरोपियन पार्लियामेंट में फ़रमाई थी वह भी सुनी है और आज की तक़रीर भी सन चुका हूँ। मैं यह भी देखता हूँ कि आपकी जमाअत में ख़लीफ़ा की बातों का अमली नक़्शा मिलता है। यदि ख़लीफ़ा की बातों को सारे संसार में फैला दिया जाए और प्रत्येक इस पर अमल करने लग जाए तो संसार में अमन क़ायम जाए।

अर्थात प्रत्येक ने अपने-अपने ढंग में अपनी हार्दिक भावनाओं का प्रकटन किया। और प्रत्येक हुज़ूर अनवर के भाषण से प्रभावित हो कर यहां से विदा हुआ।

"मस्जिद मन्सूर" आकिन के इस उद्घाटन समारोह के बाद यहां से फ्रैंकफ़र्ट के लिए प्रस्थान था।

सवा नौ बजे यहां से फ्रैंकफ़र्ट के लिए प्रस्थान हुआ। आकिन से फ्रैंकफ़र्ट की दूरी 261 किलोमीटर है। लगभग सवा दो घंटे की यात्रा के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का साढ़े ग्यारह बजे जमाअत जर्मनी के मर्कज़ "बैयतु सुबूह" फ्रैंकफ़र्ट में पधारे।

जब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कार से बाहर पधारे तो फ्रैंकफ़र्ट और जर्मनी के विभिन्न शहरों की जमाअतों से आए हुए जमाअत के लोग, पुरुषों महिलाओं और बच्चों, बच्चियों ने अपने प्यारे आक़ा का बड़ा जोश से स्वागत किया। बच्चे और बच्चियां एक ही ढंग के ख़ूबसूरत कपड़ों को पहने ,विभिन्न समूहों की सूरत में दुआइया नज़्में और स्वागत गीत प्रस्तुत कर रहे थे। श्रद्धा और मुहब्बत से प्रत्येक ओर हाथ ऊँचे थे और اهلاً وسهلاً ومرحبا की सदाएँ बुलंद हो रही थीं और लोगों जोश से परिपूर्ण नारे बुलंद कर रहे थे।

आदरणीय इदरीस अहमद साहिब लोकल अमीर फ्रैंकफ़र्ट और आदरणीय मुहम्मद अशर्फ़ ज़िया साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला फ्रैंकफ़र्ट ने हुज़ूर अनवर को स्वागत कहते हुए हाथ मिलाने का सौभाग्य प्राप्त किया। अपने प्यारे आक़ा का स्वागत करने वाले यह लोगों फ्रैंकफ़र्ट शहर के विभिन्न हलक़ों के अतिरिक्त WIESBADEN GROSS GERAU HANAU FLORSHEIM BADHOMBURG DIETZENBACH OFFENBACH ESCHBORN MORFELDEN की जमाअतों से आए थे। अपने प्यारे आक़ा के स्वागत के लिए ये लोग बड़े लम्बी यात्रा कर के पहुंचे थे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपना हाथ बुलंद कर के सबको अस्सलामो अलैकुम कहा और अपने दोनों ओर खड़े श्रद्धालुओं के मध्य से गुज़रते हुए अपनी रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

ग्यारह बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने पधार कर नमाज़ मगरिब, ईशा जमा करके पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के स्वागत के लिए जर्मनी की विभिन्न जमाअतों से जो लोगों पुरुष महिलाएं यहां पहुंची थी और जिनकी संख्या एक हज़ार तीन सौ के लगभग थी। इन सभी ने अपने प्यारे आक़ा के अनुसरण में नमाज़ मगरिब, ईशा पढ़ने का सौभाग्य पाया।

उनमें से कुछ ऐसे भी थे जो पिछली कुछ माह की यात्रा करके पाकिस्तान से किसी माध्यम से यहां पहुंचे थे और उनके जीवन में हुज़ूर अनवर के अनुसरण में यह पहली नमाज़ थी। ये सभी अपनी इस ख़ुशनसीबी पर बेहद ख़ुश थे और शुक्र के सिज्दे अदा कर रहे थे और उन मुबारक और बरकतों वाली घड़ियों से लाभान्वित हो रहे थे। जो उनको एक जीवन प्रदान करने वाला पानी प्रदान कर रही थीं। उनकी वर्षों की प्यास अपने प्यारे आक़ा के दीदार से पूरी हो रही थी और ये क्षण उनके जीवन में पहली बार आए थे। अल्लाह तआला ये सौभाग्य और बरकतें हम सब के लिए मुबारक करे आमीन।

24 मई इतवार के दिन 2015 ई

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे तशरीफ कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर ने दफ़्तरी डाक, पत्र और रिपोर्टस देखीं और हिदायतों से नवाज़ा।

प्रोग्राम के अनुसार साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब ऐडीशनल वकीलुल्माल लंदन को बुलाया फ़रमाया और कुछ दफ़्तरी मामलों और मामलों के हवाला से हिदायातें दीं।

इस के बाद फ़ैमिलीज़ और इन्फ़िरादी लोगों की मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ

फ़ैमली और इन्फ़िरादी मुलाक़ात

आज सुबह के इस सैशन में 35 फ़ैमिलीज़ के 137 लोग और 48 लोग ने इन्फ़िरादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोग ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ जर्मनी की जमाअतों HOFHEIN, EPPELHEIM, TRIER, REUTLINGEN, मनहाइम, बुख़सल HEUSENSTAMM, LANGEN,STUTTGART वेज़ बादिन, NIDDA, AALEN, DRESDEN, फ़ुलडा, हाइडल बर्ग WALLDORF, USINGEN, KARLSRUHE, GELNHAUSEN, FRIEDBERG, NEUHOF, MAINZ, GINSHEIN और HAMBURG से आई थीं।

कुछ जमाअतों से ये फ़ैमिलीज़ बड़े लम्बी यात्रा तय कर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं, विशेषता हिमबर्ग शहर से आने वाली फ़ैमलीज़ पाँच सौ किलोमीटर की दूरी तय कर के पहुंची थीं।

जर्मनी की जमाअतों के अतिरिक्त मलिक LITHUANIA से आने वाले लोगों ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक मुलाक़ात के समय शिक्षा प्राप्त करने वाले बड़े बच्चों और बच्चियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए।

आज मुलाक़ात करने वालों में से एक बड़ी संख्या इन फ़ैमिलीज़ की है जो इस वर्ष पाकिस्तान से यहां पहुंची हैं और अपने जीवन में पहली बार ख़लीफतुल मसीह के दर्शन से लाभान्वित हो रही थीं। अपने ही मुल्क में, अपने हम वतनों के अत्याचारों से सताए हुए यह लोग और उनके बच्चे और बच्चियां कितने ही ख़ुशनसीब थे कि उन्होंने आज अपने प्यारे आक़ा के क़ुरब में कुछ घंटे व्यतीत किए, उनके ग़म दूर हुए और दिल संतुष्टि से भर गए और कभी न ख़त्म होने वाली दुआओं के खज़ाने लेकर यहां से विदा हुए। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम दो बजकर पंद्रह मिनट पर समाप्त हुआ।

आमीन का आयोजन

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले आए जहां प्रोग्राम के अनुसार आमीन का समारोह हुआ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने निम्नलिखित पच्चीस बच्चों और बच्चियों से क़ुरआन करीम की एक एक आयत सुनी और अन्त में आमीन करवाई।

निम्नलिखित ख़ुशनसीब बच्चों और बच्चियों ने आमीन के समारोह में शामिल होने का सौभाग्य पाया।

प्रिय अहमद फ़ुज़ान रज़ा, प्रिय अदन महमूद, प्रिय उमंग महमूद , सबाहत अहमद शकील, बिलाल अहमद, तहसीन रज़ा अहमद, बासिल अहमद बट, मलिक फ़ारान अहमद, एहतिशाम अहमद , मग़फ़ूर अहमद, बासिल अहमद बाजवा, जहांज़ेब तनवीर, सुहैब कामरान जावेद, ज़ीशान महमूद मलिक, फ़ारान महमूद मलिक, प्रिय ज़की अहमद, जाज़िब अहमद, शाज़िल नासिर प्रिया तहमीना अहमद, प्रिया कायनात नफ़ीस , प्रिया सायरा इफ़्फ़त, प्रिया ग़ज़ाला तहरीम, प्रिया मर्यम गुल, प्रिया हाला क़मर ज़फ़र, प्रिया कुर्रातुल ऐन।

आमीन के समारोह में हिस्सा लेने वाली ये बच्चियां और बच्चे निम्नलिखित

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly **BADAR** Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 14 January 2021 Issue No.2

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

जमाअतों से आए थे।

लियो बिक, बुरख़साल, HEILBRONN NURNBERG, EPPELHEIM, BREMEN, PFORZHEIM, KARLSRUHE, हाईडल बर्ग, BUTEHUDE, HANNOVER, RATINGEN, SOEST, DORTMUND, CALW, WAIBLINGEN, RENNINGEN, और ESSLINGEN.

इस समारोह में शामिल होने के लिए HANNOVER से आने वाले बच्चों और बच्चीयों ने 350 किलोमीटर और BREMEN से आने वाले बच्चों ने 430 किलोमीटर का यात्रा तय करके शमूलीयत का सौभाग्य पाया।

आमीन के इस समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर और असर जमा करके पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

पिछले पहर भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ दफ़्तरी मामलों को पूरा करने में व्यस्त रहे। प्रोग्राम के अनुसार छ: बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमली मुलाक़ातें शुरू हुईं

फ़ैमली मुलाक़ात

आज शाम के इस प्रोग्राम में जर्मनी की 43 जमाअतों से आने वाली 56 फ़ैमलीज़ के 204 लोग और 48 लोग ने इन्फ़िरादी तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

KASSEL से आने वाली फ़ैमलीज़ 180 किलोमीटर और HONNOVER से आने वाली फ़ैमलीज़ 350 किलोमीटर की लम्बी यात्रा तय करके अपने आक़ा के दर्शन के लिए पहुंची थीं। इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोग ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य भी पाया। हुज़ूर अनवर ने प्रेम पूर्वक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क़लम प्रदान फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फ़रमाए। मुलाक़ात का यह प्रोग्राम नौ बजे तक रहा।

इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहो तआला ने आदरणीय सईद रफ़ीक़ साहिब मुबल्लिग़ सिलसिला की दावत वलीमा में शामिल हुए। इस समारोह का प्रबन्ध बैयतुलसुबूह के ही एक हाल में किया गया था। (सईद रफ़ीक़ साहिब M.T.A. इंटरनेशनल के लाइब्रेरी विभाग में सेवा की तौफ़ीक़ पा रहे हैं और उनकी शादी जर्मनी में हुई है।)

इस समारोह के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के हाल में तशरीफ़ ले आए और पौने दस बजे नमाज़ मग़रिब, ईशा जमा कर के पढ़ाई , नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

25 मई सोमवार के दिन 2015 ई

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह साढ़े चार बजे पधार कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने रहने के स्थान में तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने दफ़्तरी डाक, पत्र और संसार के विभिन्न देशों से प्राप्त होने वाली फैक्सज़ और रिपोर्टें फ़रमाएं और हिदायतों से नवाज़ा।

फ़ैमली मुलाक़ात

प्रोग्राम के अनुसार सुबह साढ़े ग्यारह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर पधारे और फ़ैमिलीज़ और इन्फ़िरादी लोगों की मुलाक़ात का प्रोग्राम शुरू हुआ।

आज प्रोग्राम के अनुसार 39 फ़ैमिलीज़ के 143 लोग और 6 लोग ने इन्फ़िरादी तौर पर इस प्रकार संपूर्णता 149 लोगो ने अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। इन सभी फ़ैमिलीज़ और लोगों ने अपने आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया।

पृष्ठ 1 का शेष

कि हज़रत अबू हुरैरह बड़े पुराने सहाबी थे हालाँकि वह पुराने सहाबी नहीं बल्कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की वफ़ात से केवल तीन वर्ष पहले ईमान लाए थे परन्तु रिवायतें सबसे ज़्यादा उन्हीं की हैं और शायद यही कारण है कि लोग पुराने पुराने सहाबियों को नहीं जानते परन्तु अबु हुरैरा को जानते हैं क्योंकि हदीसों में बार-बार आता है कि अबु हुरैरा यह कहा अबु हुरैरा ने वह कहा। उद्देश्य वह बहुत बाद में इस्लाम लाए हैं लेकिन उन के दिल में धर्म सीखने का जोश था जब वह ईमान लाए तो रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मज्लिस के सम्बन्ध में उन्होंने यह प्रण कर लिया कि चूँकि और लोगों ने आपकी बहुत सी बातें सुन ली हैं और मुझे आख़िर में ईमान लाने की तौफ़ीक़ मिली है इस लिए में अब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का साथ नहीं छोड़ूँगा। इसलिए जिस तरह क़ुरैश मक्का में आकर बैठ गए थे वह भी मस्जिद में आकर बैठ गए और उन्होंने पर्ण किया कि जिस तरह भी हो सका में धर्म की सेवा करूँगा दुनिया का कोई काम नहीं करूँगा। उनका एक भाई भी मुस्लमान हो चुका था चूँकि यह सब कारोबार छोड़कर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आ बैठे थे इस लिए कुछ समय में तो वह अपने ईमान के जोश में अपने भाई को खाना पहुँचाता रहा। अरबों का जीवन बहुत ही सादा हुआ करती था वह खजूरें खाकर पानी पी लेते और इस को आहार के लिए काफ़ी समझते या कभी सूखा गोश्त मिल जाता तो वही खा कर पानी पी लेते। उद्देश्य बहुत ही सादा जीवन व्यतीत करते थे और उनको खाना पहुंचाना कोई मुश्किल कार्य न था। परन्तु कुछ समय तक ईमान के जोश में उन्हें खाना पहुंचाने के बाद हज़रत अबु हुरैरा का भाई तंग आ गया (हज़रत अबु हुरैरह एक ईसाई वंश में से थे और उन की माता भी ईसाई थीं) जब उसने तंगी महसूस की तो एक दिन वह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सेवा में हाज़िर हुई और उसने कहा कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम आप अबु हुरैरा से कहिए कि वह कुछ कमाया भी करे। यह क्या कि सारा दिन मस्जिद में ही बैठा रहता है कोई काम नहीं करता। रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया तुम्हें क्या मालूम कि ख़ुदा उसी के कारण से तुम्हें भी रिज़्क़ देता हो । हज़रत ख़लीफ़ा अव्वल रज़ी अल्लाहु अन्हु ने यही घटना हमारे नाना-जान मरहूम को सुनाई इसलिए उस के बाद नाना-जान मरहूम ने दुनयावी शिक्षा का इरादा छोड़कर उन्हें इसी कार्य पर लगा दिया

(तफ़सीर कबीर, भाग 10 पृष्ठ 116-117 प्रकाशित क़ादियान 2010)

☆ ☆ ☆ ☆

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने प्रेम पूर्वक मुलाक़ात के समय शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को क़लम अता फ़रमाए और छोटी आयु के बच्चों को चॉकलेट अता फ़रमाए।

मुलाक़ात करने वाली ये फ़ैमिलीज़ जर्मनी की जमाअतें SOEST, CALW, BURSTADT, RADOLFZELL, NORTHEIM, NIEDERHAUSEN, NIDDA, DUSSELDORF, KOBLENZ, HANAU, ALTMANN, RENNINGEN, OSNABRUCK, FREINSHEIM, HOFHEIM, WURZBURG, USINGEN, DORTMUND, GODDELAU, ERFELDEN, AALEN, मन हाइम और PADERBORN से आई थीं।

कुछ जमाअतों से ये फ़ैमिलीज़ बड़े लम्बी यात्रा करके अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं, कासल वाले 180 किलोमीटर और DUSSELDORF से आने वाली फ़ैमिलीज़ 230 किलोमीटर की यात्रा तय करके पहुंचे थे।

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम मध्याह्न दो बजे ख़त्म हुआ। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ नमाज़ ज़ुहर और असर की अदायगी के लिए मस्जिद के हाल में पधारे।

(शेष....................)

☆ ☆ ☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad